प्राचीन राजस्थानी काव्य

# प्राचीन राजस्थानी काव्य

सम्पादक
मनोहर शर्मा




साहित्य अकादेमी

*Prachin Rajasthani Kavya* : A selection from old Rajasthani poetry, compiled and edited by Manohar Sharma Sahitya Akademi, New Delhi (1985), Rs 20



प्रथम संस्करण १९८५

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली ११०००१

क्षेत्रीय कार्यालय
ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता ७०००२९
२९, एल्डाम्स रोड (द्वितीय मंजिल), तेनामपेट, मद्रास ६०००१८
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०००१४

मूल्य
बीस रुपये

मुद्रक
संजय प्रिंटर्स,
दिल्ली ११००३२

# भूमिका

राजस्थान रै इतिहास पर आखो भारत गौरव अनुभव करै है पण ईं ऐतिहासिक पाळा रो निर्माण तो राजस्थानी काव्य री प्रेरणा सूं ईज हुयो, ईं विषय में भी दो मत नी हुय सकै। लारलै लगभग एक हजार बरसां सूं राजस्थानी भाषा मे बराबर काव्य सर्जना हुय रैयी है अर या साहित्य-निधि घणी विशाल तथा अणमोल है। हाल-ताईं ईं साहित्य सम्पत्ति रो पूरो लेखो-जोखो भी नी हुय पायो है पण ईं रो जितरो भी अंश प्रकाश मे आयो है, उण री महिमा सूं काव्य-पारखी अर साहित्य-रसिक चमत्कृत है।

साहित्य अकादमी रो यो निर्णय घणो वखाण-जोग है कै पुराणै राजस्थानी काव्य-साहित्य रो एक प्रतिनिधि सग्रह प्रकाशित करयो जावै, जिणसूं मोटै रूप में एक साधारण पाठक भी ईं सूं अणजाण नी रैवै अर ईंरी गौरव-गरिमा नै जाण लेवै अकादमी दूजी भारतीय भाषावा रा भी इसा सग्रह प्रकाशित करया है अर उणीज शृखला री एक कडी यो प्रकाशन भी है।

राजस्थानी काव्य-साहित्य री विशालता अर सागै ही विविधता नै देखता यो काम घणो दोहरो है कै ईं काव्य-निधि री सगळी बानगिया किण रूप मे सजाई जावै ?

ईं रै सागै या चीज भी ध्यान देवण-जोग है कै पुराणै राजस्थानी काव्य रो बडो अंश हाल ताईं अणछप्यो है अर प्रकाश मे आवण री उडीक मे है। निश्चय ही प्राचीन राजस्थानी काव्य री मात्र प्रकाशित पोथिया रै आधार पर ही राजस्थानी रो प्रतिनिधि काव्य-सग्रह हस्त प्रतिया रै सहारै बिना पूरो नी हुय सकै अर हस्त प्रतिया रो अवलोकन घणो श्रम-साध्य है।

ईं रै सागै ही राजस्थानी भाषा म इसी सामग्री भी घणी मात्रा मे प्राप्त है, जिण रा रचयिता अज्ञात है अथवा लोकमुख सूं सुणर समय-समय पर लिपिबद्ध करी जावती रैयी है। इसी हालत मे उण रो मूळपाठ एक समस्या है जिण

रो समाधान भी सहज नी है। ईं सामग्री री बानगी भी राजस्थानी काव्य-सग्रह सू टाळी नी जा सकै।

प्रश्न यो भी है कै प्रतिनिधि-सग्रह मे कवि नै इकाई मान्यो जावै अथवा कविता नै ? ईं रै साथै यो सवाल भी जुड्योडो है कै सम्पादक आप री पसद नै प्रधानता देवै अथवा लोक-रुचि नै ?

ईं सारी वाता नै ध्यान मे राखर चेष्टा करी गई है कै सग्रह मे पुराणै राजस्थानी काव्य रा नमूना सकलित करता प्रकाशित अर अप्रकाशित दोनू भात री सामग्री रो उपयोग कर्‌यो जावै अर कवि साथै कविता नै भी जरूरत-मुताबिक ईकाई मानर यथोचित प्रतिनिधित्व दियो जावै। साथै ही सम्पादक री पसद नै गौण मानर रचना नै ही प्रधानता दी जावै, जिण सू समग्र पुराणी परम्परा रै राजस्थानी काव्य रो एक सागोपाग चित्र परगट हुय सकै।

राजस्थानी काव्य-साहित्य विषय री दृष्टि सू विविधता-पूर्ण है तो साथै ही रचना-प्रकार रै विचार सू भी उण मे अनेक विधावा है। 'डिंगल गीत' जिसी कई चीजा तो उण मे एकदम ही अनूठी है।

ध्यान राखणो चाहिजै कै राजस्थानी रो पुराणो साहित्य ईं प्रदेश रै इतिहास साथै एकप्राण है और ईं क्षेत्र मे एक भी इसो विशिष्ट व्यक्ति नी रैयो, जिण रै सम्बन्ध मे किणी रूप मे काव्य-रचना नी मिलै।

साधारण तौर सू राजस्थानी रो पुराणो-साहित्य वीर रस रो साहित्य ही समझ्यो जावै है अर या उण री एक खरी विशेषता है भी, पण साथै ही राजस्थानी भाषा मे दूजै रसा सू सम्बन्धित सामग्री भी कम कोनी अर वा ऊचै दरजै री भी है।

राजस्थानी रो शृगार-रसात्मक साहित्य कम महत्त्वपूर्ण नीं है तो साथै ही ईं रो भक्ति-साहित्य भी विशाल अर महिमा-मय है। राजस्थानी भक्ति-धारा मे निर्गुण अर सगुण भक्ति रो पूरो प्रवाह तो है ही पण अठै राम तथा कृष्ण री भक्ति साथै शक्ति-उपासना सू सम्बन्धित रचनावा री सख्या भी कम नी है। राजस्थानी भक्ति-साहित्य री या खूबी है कै अठै श्रीकृष्ण रै गोपीवल्लभ रूप नै प्रधानता न दी जायर रुक्मणी-उद्धारक अथवा जगत-उद्धारक रूप नै प्रमुखता दी गई है। इण भात राजस्थानी काव्य मे वीरता अर भक्ति रो अनूठो समन्वय देखणै-जोग है।

प्रस्तुत सग्रह मे कवि अथवा रचनावा करीब-करीब कालक्रम सू राखी गई है। प्रारभ में 'लोकवाणी' शीर्षक सू वैं दूहा दिया गया है, जिका आचार्य हेमचद्र सूरि आप रै व्याकरण-ग्रथ मे उदाहरण-स्वरूप सकलित कर्‌या है। ये दूहा आचार्य हेमचद्र री रचना नी हुयर उण जमानै री लौकिक साहित्य-सम्पत्ति है पण या असाधारण रूप सू महत्वपूर्ण है। या विचार-धारा अथवा भाव-धारा आगै भी राजस्थानी काव्य में किणी रूप मे चालती रैयी है।

साथै ही ध्यान राखणो चाहिजै कै चद, नरपति नाल्ह अर बहादर ढाढी री

रचनावा काल तथा पाठ रै विचार सू विवाद-ग्रस्त है। ई कारण ई कवियां री रचनावा रा नमूना कालक्रम नैं छोडर सुविधा रै विचार सू राजस्थान री अति-प्रसिद्ध लोकगाथावा ('ढोला-मारू रा दूहा' तथा मेह ऊजळी रा सोरठा') रै पूर्व-क्रम मे राख्या गया है। आशा है, विज्ञ पारखी ई चीज नैं कांई नई स्थापना रै रूप में ग्रहण नी करसी।

प्रस्तुत सग्रह मे शालिभद्र सूरि(१३वी सदी वि०) पाल्हण (१३वी सदी वि०) अर विनयचद्र सूरि (१३वी सदी वि०) री रचनावा घणी पुराणी है। इणा मे लारली दोनू रचनावा प्रकृति-काव्य रा नमूना है। इणी भात अज्ञात कवि री 'बसत' शीर्षक रचना भी पुराणी है अर प्रकृति-काव्य री बानगी है।

श्रीधर व्यास (१५वी सदी वि०), शिवदास गाडण (१८वी सदी वि०), भीम (१४६६वि०), पद्मनाभ (१६वी सदी वि०), भाण्डउ व्यास (१६वी सदी वि०), कुशळलाभ वाचक (१७वी सदी वि०), हेमरतन (१७वी सदी वि०) माघोदास दधवाडियो (१७वी सदी वि०), सायो झूलो (१७वी सदी वि०), समयसुन्दर महोपाध्याय (१७वी सदी वि०), जगो खिडियो (१८वी सदी वि०), किसनउ (१८वी सदी वि०), गिरधर आसियो (१८वी सदी वि०), अजीतसिंघ महाराजा (१८वी सदी वि०), वीरभाण रतनू (१८वी सदी वि०), करणीदान कवियो (१८वी सदी वि०), मछ (१६वी सदी वि०), किसनो आढो (१६वी सदी वि०) आदि री कवितावा वा रै प्रबध-काव्या माय सू चुन्योडा नमूना है अर विविध विषया सू सम्बन्धित है।[1]

अलूनाथ कवियो (१७वी सदी वि०), ईसरदास रोहडियो (१७वी सदी वि०), केसोदास गाडण (१७वी सदी वि०), पृथ्वीराज राठौड (१७वी सदी वि०), पीरदान लाळस (१८वीं सदी वि०), रामनाथ कवियो (१६वी सदी वि०), चतुरसिंह महाराज (२०वी सदी वि०) आदि राजस्थानी रा प्रसिद्ध भक्त-कवि है। इणा मे अनेक कवि इसा भी है, जिका भक्त-कवि रै साथै ही अप्रतिम वीर-कवि भी है। इण भात राजस्थानी काव्य मे वीरता अर भक्ति रो समन्वय भी देखणं जोग है।

पद्मना भट्टि० (१५४३ वि०), कृपाराम खिडियो (१६वी सदी वि०), राय-सिंघ सादू (१६वी सदी वि०) आदि री रचनावा राजस्थानी रै नीति-काव्य रा नमूना है।

गोरधन बोगसो (१७वी सदी वि०), मालो सादू (१७वी सदी वि०), पदमा (१७वी सदी वि०), दुरसो आढो(१७वी सदी वि०),पृथ्वीराज (१७वी सदी वि०),

---

१ प्रस्तुत ग्रथ राजस्थानी कवियां रा नाम पुराणी परम्परा रै अनुसार लिख्या गया है। इस प्रयोग म किणी भात असम्मान री भावना नीं समझी जावै।

जाडो मेहड़ू (१७वी सदी वि०), नरहरिदास (१७वी सदी वि०), कुभकरण सांदू (१८वी सदी वि०), धर्मवर्धन उपाध्याय (१८वीं सदी वि०), हुक्मीचद खिडियो (१६वीं सदी वि०), बाकीदास आशियो (१६वी सदी वि०), नवलदान लाळस (१६वी सदी वि०), सूर्यमल्ल मीसण (१६-२०वीं सदी वि०), हिंगळाजदान कवियो (२०वीं सदी वि०) आदि रा डिंगल-गीत राजस्थानी भाषा री अनूठी रचनावां है।

डिंगल-गीत सागै राजस्थानी मे 'दूहो' छद भी सदा सू घणो लोकप्रिय रैयो अर अठै अनेक दूहामयी रचनावा हुई हैं। नीति, भक्ति और शृगार रस रा दूहा-सोरठा तो अति प्रसिद्ध है पण सागै ही वीर रस रा दूहा भी गजब रा है। प्रस्तुत सग्रह मे डूगरसी रतनू (१७वी सदी वि०) अर केसरीसिंघ बारहठ (२०वी सदी वि०) रा दूहा ई विषय मे बानगी रूप है।

मीराबाई (१६वी सदी वि०), काजी महमद (समय अनिर्णीत), बखतावर आदि रा गेय पद समय-समय पर हस्त-प्रतिया मे सकलित करया जावता रैया है अर आज भी ये पद राजस्थान मे घणा लोक-प्रिय है।

साहित्य अकादमी रो यो निश्चय रैयो के यो काव्य-सकलन पुराणी राजस्थानी काव्य रो पूरो प्रतिनिधित्व तो जरूर करै पण सागै ही एक कवि री एक ही रचना ली जावै तो ठीक रहसी। इसी हालत मे या चीज जरूरी समझी गई कै प्रमुख कवि री रचना रै बानगी-रूप मे भला ही एक ही 'गीत' अथवा छोटो सो काव्याश दियो जावै पण उण रो प्रतिनिधित्व ई सग्रह मे जरूर रैवै। फेर भी इसा विशिष्ट कवि हुय सकै है, जिणा री कविता रा नमूना ई सग्रह मे स्थानाभाव सू सम्मिलित नी करया जा सक्या है।

जिका कवि ई सग्रह मे शामिल करया गया है, वा मे भी कई इसा है कै वा री मात्र एक ही रचना रो नमूनो दियो जावै तो वा रो सही सरूप किणी भात भी पूरो परगट नी हुय सकै। इसी परिस्थिति मे कई विशिष्ट कविया री एकाधिक रचनावा रा नमूना भी ई सग्रह मे सम्मिलित करणा जरूरी समझ्या गया है।

साहित्य अकादमी सीमित कलेवर मे एक ग्रथ म हीज सम्पूर्ण प्राचीन परम्परा रै राजस्थानी काव्य रो पूरो स्वरूप प्रस्तुत करणै रो दायित्व सूप्यो। समय, सामर्थ्य अर परिस्थितिया री सीमावा म जो कुछ भी काम बण सक्यो, वो सहृदय पाठका री सेवा मे प्रस्तुत है।

सागै ही ध्यान राखणो चाहिजे कै 'प्राचीन राजस्थानी काव्य' माय पुराणी परिपाटी रै सम्पूर्ण राजस्थानी काव्य रा नमूना क्रमिक रूप सू प्रस्तुत करया गया है अर ई सग्रह ग्रथ रो अभिप्राय इणीज रूप मे ग्रहण करयो जावै।

—सम्पादक

## टीप

# लोकवाणी

—हेमचन्द्र सूरि

पुत्ते जाए कवणु गुणु, अवगुणु कवणु मुएण ।
जा बप्पी की भुहडी, चम्पिज्जइ अवरेण ॥१॥

जइ भग्गा पारक्कडा, तो सहि मज्झु पिएण ।
अह भग्गा अम्हहतणा, तो तें मारि अडेण ॥२॥

भग्गउ देक्खिवि निअय बलु, बलु पसरिअउ परस्सु ।
उम्मिलइ ससि रेह जिवँ, करि करवालु पियस्सु ॥३॥

जहि कप्पिज्जइ सरिण सरु, छिज्जइ खग्गिण खग्गु ।
तहिँ तेहइ भड-घट-निवहि, कन्तु पयासइ मग्गु ॥४॥

सगरसएहिँ जु वण्णिअइ, देक्खु अम्हारा कन्तु ।
अइमत्तह चत्तङ्कुसह, गयकुम्भइ दारन्तु ॥५॥

अम्हे थोवा रिउ बहुअ, कायर एम्व भणन्ति ।
मुद्धि निहालइ गयणयलु, कइ जण जोण्ह करन्ति ॥६॥

महु कन्तहो बे दोसडा, हेल्लि म झङ्खहि आलु ।
देन्तहो हउ पर उव्वरिअ,, जुज्झन्तओ करवालु ॥७॥

पाइ विलग्गी अन्त्रडी, सिरु ल्हसिउ खंधस्सु ।
तोवि कटारइ हत्थडउ, बलि किज्जउ कन्तस्सु ॥८॥

भल्ला हुआ जु मारिआ, बहिणी महारा कन्तु ।
लज्जेज्ज तु वयसिअहु, जइ भग्गा घरु एन्तु ॥९॥

ते मुग्गडा हराविया, जे परिविठ्ठा ताहें ।
अवरोप्परु जोअन्ताह, सामिउ गञ्जिउ जाहें ॥१०॥

हिअडा जइ वेरिअ घणा, तो कि अब्भि चडाहु ।
अम्हाहि बे हत्थडा, जइ पुणु मारि मराहु ॥११॥

(२)

जे महु दिण्णा दिअहडा, दइए पवसन्तेण।
ताण भणन्तिए अङ्गुलिउ-जज्जरियाउ नहेण ॥१॥

वायसु उड्डावन्तिअए, पिउ दिट्ठउ सहसत्ति।
अद्धा वलया महिहि गय, अद्धा फुट्ट तडत्ति ॥२॥

जइ ससणेही तो मुइअ, अह जीवइ निन्नेह।
बिंहिवि पयारेंहि गइअ धण, किं गज्जहि खल मेह ॥३॥

जइ केवँइ पावीसु पिउ, अकिया कुड्ड करीसु।
पाणीउ नवइ सरावि जिवँ, सव्वङ्गे पइसीसु ॥४॥

भज्जवि नाहु महुज्जि घर, सिद्धत्था वन्देइ।
ताउ जि विरहु गवक्खेहिं, मक्कडघुग्घि देइ ॥५॥

(३)

गुणहिं न सपइ कित्ति पर, फल लिहिआ भुञ्जन्ति।
केसरि न लहइ बोड्डिअवि, गय लक्खेहिं घेप्पन्ति ॥१॥

जो गुण गोवइ अप्पणा, पयडा करइ परस्सु।
तसु हउ कलिजुगि दुल्लहहो, बलि किज्जउ सुअणस्सु ॥२॥

जाम न निवडइ कुभयडि, सही चवेडचडक्क।
ताम समत्तहँ मयगलइ, पइ पइ वज्जइ ढक्क ॥३॥

धवलु विसूरइ सामिअहो, गरुआ भरु पिक्खेवि।
हउ कि न जुत्तउ दुहु दिसिहिं, खण्डइ दोण्णि करेवि ॥४॥

जीविउ कासु न वल्लहउ, धणु पुणु कासु न इट्ठु।
दोण्णिवि अवसर निवडिआइ, तिण-सम गणइ विसिट्ठु ॥५॥

जइ पुच्छइ घर बड्डाइ, तो वड्डा घर ओइ।
विहलिय जण अब्मुद्धरणु, कन्तु कुडीरइ जोइ ॥६॥

महु कन्तहो गुट्ठट्ठिअहो, कउ झुम्पडा बलन्ति।
अह रिउ रुहिरें उल्हवइ, अह अप्पणे न भन्ति ॥७॥

गयउ सु केसरि पियहु जलु, निच्चिन्तइ हरिणाइ।
जसु केरए हुंकारडए, मुहहु पडन्ति तृणाइ ॥८॥

(सकलित)

# भरत-बाहुबली

—शालिभद्र सूरि

वेगि सुवेग सु बुलनइ, सभळि बाहूबळि।
राउत कोइ तुह तुल्लइ, ईणिइ भळइ रवि-तळि ॥७६॥

जा तव बंधव भरह नरिंदो,
जसु भुइ कपइ सग्गि सुरिंदो।
जीणइ जीता भरह छ खंड,
म्लेच्छ मनाव्या आण अखंड ॥८०॥

भडि भडत न भूयबळि भाजइ,
गडयडतु गहि गाढिम गाजइ।
सहस बतीस मउडाधा राय,
तूय बंधव सवि सेवइ पाय ॥८१॥

चऊद रयण घरि नवइ निहाण,
सघ न गय घड जसु केकाण।
तूय हवडा पाटह अभिषेको,
तूय नवि आवीय बंधव विवेको ॥८२॥

विण बंधव सवि संपय ऊणी,
जिम विण लवण रसोइ अलूणी।
सुग्रह दंमण उनरठिय राउ,
नित निन बाट जोइ तुम्ह भाउ ॥८३॥

घडउ महोयर बनइ वड वीर,
देव ज प्रणमइ गाहस धीर।
एउ गोह बनइ पाथरीउ,
भरहेसर नइ तइ परवरीउ ॥८४॥

तु बाहूवळि जपइ, वहि वयण म काचु।
भरहेसर भय कपइ, ज जग तु साचु ॥८५॥

समरंगणि तिणि सिउ कुण काछइ,
जोह वधव मइ सरिसउ पाछइ।
जावत जवुदीपि तसु ताण,
ता अम्ह कहीइ क्वण ए राण ॥८६॥

जिम जिम सु जि गढ गाढिम गाढउ,
हय गय रहवरि करीय सनाढउ।
तस बरधासण आपइ हूदो,
तिम तिम अम्ह मनि परमाणदो ॥८७॥

जु न आव्या अभिषेकह वार,
मु तिणि अम्ह नवि कीधा सार।
वडउ राउ अम्ह वडउ जि भाई,
वहि भावइ तिहा मिलिसिउ जाई ॥८८॥

अम्ह ओळग नी वाट न जोई,
भड भरहेसर विकर न होई।
मझ बधव नवि पीटइ कीमइ,
लोभीया लोक भणइ सव ईम्हई ॥८९॥

('भरतेश्वर बाहुबलि रास' से)

## वियोगिनी

पाल्हण

पोसु सु पत्तउ मतिहि सियारु,
    घिउ घेउर लापसिय पसारु।
लाडु लावण भोयणु होइ,
    पोसउ पिडु सयलु जग लोए।
जादरि गजयडि ओढण ए,
    रयणि दिवसि नवु पडइ तुसारो।
सु कुमरि गद्गुग्घिय इव भणए,
    मइ मेल्हिवि गउ नेमिकुमारो॥७॥

माहु महाभडु हिम सिय-वायु,
    वण वणगइ गुडइणि सिय-दाघु।
सिउ गिउ गिउ जणु अवरए,
    जा हरि गवडि तहव अणुसरए।
एव रयणि वरिसाअनिय,
    कुमरि भणइ, किम करि पयणाउ।
नेमि विहूणा परि दिन,
    हा विधि, दइय न मेले साए॥८॥

आउ आगम फागुण तणउ,
    अति सिउ पवणु फरुसइ घणउ।
गिरि तरवर फल पान झडहिं,
    डालहिं डाल मिग्गा घरि जाहिं।
दिसि दिसि अगु मारोझिअए,
    सिम्ब सिम्ब मामहिं बहु दुख भार।
कुमरि भणइ, सिय मोंदमओ,
    तइ विनु, गाढिय नेमिकुमार॥९॥

चीतु ससिरु सपत्तु बसतु,
मालइ-मालय कमल विहसतु।
महुय गलहि मउरिया सहार
कोइल महुर करहि झकार।
तरुणि नयणि काजळु ठवहि,
निवसहि चीरु रुळावहि हारो।
तो न चलइ मनु मुझ-तणओ,
हुयवहु सरणु कि नेमिकुमारो ॥१०॥

वयसाहहँ विहसइ वणराए,
वेउलु कुडु निवालिय जाए।
चपउ पाडल कुसुव कल्हारो,
दवणउ मरुअउ देवगधारो।
जणु परिमळ मोहिउ भमए,
महु चीतत निसि नोडि विहाए।
नमिकुमरु तव चरणु गओ,
सखि वैसाखु दुहेलउ जाए ॥११॥

('नेमि बारहमासो' सू)

# राजमती-विरह

विनयचन्द्र सूरि

सावणि सरवणि कडुय मेहु,
गज्जइ विरहि रि झिज्जइ देहु।
विज्जु झबक्कइ रक्खसि जेम,
नेमिहि विणु सहि सहियइ केम॥२॥

सखी भणइ, सामिणी म म झूरि,
दुज्जण तणा न वंछित पूरि।
गयउ नेमि तउ विणठउ काइ,
अछइ अनेरा वरह सयाइ॥३॥

बोलइ राजल तउ इहु वयणु,
नत्थी नेमि सम वर-रयणु।
धरइ तेजु गहगणि सवि ताव,
गयणि न उग्गइ दिणयर जाव॥४॥

भाद्रवि भरिया सर पिक्खेवि,
सकरुण रोअइ राजल देवि।
हा एकल्ली मइ निरधार,
किम ऊवेखिसि करुणासार॥५॥

भणइ सखी, राजल म म रोइ,
नीठुरु नेमि न अप्पणु होइ।
सिंचिय तरुवर परिपल्लवंति,
गिरिवर पुण कढ़ेरा हुंति॥६॥

साचउ सखि, वर गिरि भिज्जंति,
किमइ न भिज्जइ सामल कंति।
घण बरिसंतइ सर फुट्टंति,
सायर पुण घणु ओल्हइ रंति॥७॥

आसो मासइ असु-प्रवाह,
राजल मेल्हइ विणु नेमिनाह।
दहइ चदु चदण हिम सीउ,
विणु भत्तारह सउ विवरीउ ॥८॥

सखि नवि खोना नेमिहि रेसि,
म म आपणपउ सउ खय नेसि।
जिणि दिखाडिउ पहिलउ छेहु,
न गणिउ अट्ठ-भवतर नेहु ॥९॥

नेमि दयालू सखि निरदोसु,
कीजइ उग्रसिण ऊपरि रोसु।
पसुय भराविउ मूकउ वाडु,
मुझ प्रिय सरिसउ कियउ विहाडु ॥१०॥

कत्तिग कित्तिग ऊगइ सन्न,
रजिमति जिज्झिउ हुइ अति झन्न।
राति दिवसु अच्छइ विलवत,
वलि वलि दय करि, दय करि कत ॥११॥

नेमि तणी सखि, मूकि न आस,
नायरु भगउ सो घर-वास।
इमइ इसी सनेहल नारि,
जाइ कोइ छडवि गिरिनारि ॥१२॥

बायरु किम सखि, नेमि जिणिंदु,
जिणि रिणि जित्तउ लक्ख नरिन्दु।
फुरइ सास जा अग्गलि नास,
ताव न मेल्हउ नेमिहि आस ॥१३॥

('नेमिनाथ चतुष्पदिका' सू)

# रणमल्ल

श्रीधर व्यास

(चुपई)

मलिक मल मज्ञिम निशिदिवसउ,
    तव हैजब फुरमाण स दिद्धउ।
ईडरगढि अबहिं चढि चल्लउ,
    जइ रणमल्ल पासि दम मुल्लउ ॥२७॥

गिर फुरमाण धरवि सुरताणीय,
    दफदर खान मान दीवाणीय।
अगर गरास दाग सब छांडीय,
    गिरि पाखरी ग्धान कर मांडीय ॥२८॥

अमियर मम्भि बाहू उछागीय,
    बोलिइ हठि हैबन्ध हकारीय।
मुझ गिरिवमठ मेटाय सगिइ,
    तू म्यमणि भाण न उगिइ ॥२९॥

(सिंह विलोकित)

जो मवर पुडगढि वरति नगिइ,
    तौ पमधज बंध म धणइ नमिइ।
धरि मरधानक्त हाड मनिइ,
    तू मैठ न आवू वाग विमिइ ॥३०॥

पुन रणाम श्रीपजारइयडो,
    सुरत्तांदिनि चखि म चड्डि घडी।
वड वंचिसु हुकइ छगीग मणु,
    पर मल्लिमां रा हम्मीरपणु ॥३१॥

दळ दारुण दफरखान जवे,
मिइ भग्गु अग्गि खगारवे।
हव पट्टण पद्धरि घरिसु अल,
नइ थिनडिमु सत्तिरि मह्म दळ॥३२॥

मिइ सगरि सम्मसदीन नडी,
पडिभग्गु अगोअग्गि भिडी।
जय मड्डिमि मुझ रणमल्ल सम,
नव खग्गिमि ममवर मग्गिमु जम॥३३॥

म म मोडि म मडि मलिक्क घणू,
हू समरि विडारण मेछ तणू।
जय ऊठिसि हठि हक्कत रणे,
तव न गणू पुण सुरताण मणे॥३४॥

बळ बोलि म चल्लि मलिक्क वहद,
मन फरलिसि धरविमि वह्नुस मुह।
जव चपिसि ईडरसिहरतळ,
तव पेखिसि मू रणमल्ल बळ॥३५॥

(रणमल्ल छद' सू)

# पाटण

भीम

मरुधरदेश प्रभु पूछइ हसिउ,
कहि कामिणि ते पाटण किसिउ।
स्वामि, सहारइ आपू छेह,
सामइ दय दोहाइउ एह ॥४१२॥

जिणि पाटणि पोढा प्रागार,
मेरु-शिखर-सिउ वहइ विवाद।
गरुउ गढ ऊचा आवास,
जिंहि अतिशय दीसइ कैलास ॥४१३॥

मांहि महरा विष्णु गढ ब्रह्मा,
सहू समाचरइ कुलोचित धर्म।
शिवार भगति-सगउ ओर भाव,
अधिकउ धर्ममर्गि प्रभाव ॥४१४॥

बावन वीर वसइ जिहा वाणि,
पूजइ जिनवर पलीइ आणि।
जिनशासन गाडउ गहगहइ,
जीवदया देखी मन रहइ ॥४१५॥

ते ओदिणि चउरासी नु ठाम,
चउराशी चेटवनु जिहि ठाम।
सुन्दर भुज विशाल गढ प्रेम,
गावउ गाविणि-गणउ सवेग ॥४१६॥

पन्नपि रोजराउनी भ्रान्ति,
दिवस पाहिडे वडेरी पानि।

ठामि-ठामि मडळ मडाइ,
ठामि-ठामि नित गुणिआ गाइ ॥४१७॥

ठामि-ठामि ढोणा ढोईंइ,
ठामि-ठामि जोणा जोईंइ।
सातइ वसण मावळीइ जोउ,
माहि घणा छइ छइ माणस तउ ॥४१८॥

इकि सीला लखिमी लइ जाइ,
भोळा भमइ सा न विकाइ।
मणा न वामण मोहण-तणी,
वरतइ धूरत विद्या घणी ॥४१९॥

वसइ वासि छत्रीसइ कुळी,
माहि घुहु मुग्धा नइ मडळी।
चउरासी सूरा सामत,
च्यारि महाधर मत्रि अनत ॥४२०॥

चउरासी चुहटानी जुगति,
वरणावरण तणी बहु धिगति।
उत्तम मध्यम लोन अपार,
भामा भना न लाभट पार ॥४२१॥

करइ राज सालिवाहण राउ,
वइरी तणउ विधसइ ठाउ।
अउट पीठ पहिनू पहिठाण,
सामीय आगि-तणू अहिठाण ॥४२२॥

('सदयवत्स वीर प्रबध' से)

# अचळदास खीची

सिवदास गाडण

उत्तर दक्खिण देस, पूरब नइ पच्छिम तणा।
खड़िया खउदाळिम कटक, नमिया सकल नरेस ॥१॥

तइ पतिसाह तणेह, पायाणउ पारस सुणि।
हळहळिया हेवाणवइ, गढपति गमे-गमेह ॥२॥

तइ सचलतइ सूर, घूघळियउ, धर धमधमी।
खउदाळिम खीची दिसइ, वियउ पयाणउ पूर ॥३॥

एकइ धन्न धमगड़ा, एवड अंतर थाइ।
सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाइ ॥१॥

गइवर-गळइ गळत्थियउ, जहँ खचइ तहँ जाइ।
सीह गळत्थण जइ सहइ, तउ दह लक्खि विकाइ ॥
तउ दह लक्खि विकाइ, मोन जाणवि मुहँगेरा।
कइवा वारणि बधिन, कोपि खउदाळिम केरा ॥
खेड खीध पड़ियार, निहसि कट्टारउ हुइ घरि।
राइ न छंडइ नरसिंघ, गळइ गळहत्थ जउ गइवरि ॥२॥

निरगइ अचळ निडार, सुरां गुरू सुरजइ उदइ।
एकणि दिसि आया असुर, पर दूजी परिवार ॥१॥

कळि पाळट करणीक, सानम सोम हमीर जिम।
गउ अनियइ गांधा तणा, मिळइ राव करणीक ॥२॥

मिळतइ मेछि कधार, मइ मिळनइ परिवार-मइ।
गगरूउ घर गीधण तणउ, माइ भड़थउ अहंकारि ॥३॥

ठामि ठामि मडळ मडाइ,
ठामि ठामि नित गुणिआ गाइ ॥४१७॥
ठामि-ठामि ढोणा ढोईइ
ठामि ठामि जोणा जोईइ।
सातइ वसण सावळीइ जोउ,
माहि घणा छइ छइ माणस तउ ॥४१८॥
इकि लीला लखिमी लइ जाइ,
भोळा भमइ सा न विकाइ।
मणा न कामण मोहण-तणी,
वरतइ धूरत विद्या घणी ॥४१९॥
वसइ वासि छत्रीसइ कुळी,
माहि बहु मुग्धा नइ मइळी।
चउरासी सूरा सामत,
ब्यारि महाधर मवि अनत ॥४२०॥
चउरासी चुहटानी जुगति
वरणावरण तणी बहु विगति।
उत्तम मध्यम लोक अपार,
भामा भना न लाभइ पार ॥४२१॥
करइ राज सालिवाहण राउ,
वइरी तणउ विधसइ ठाउ।
*अऊठ पीठ पहिलू पहिठाण,*
सामीय आलि-तणू अहिठाण ॥४२२॥

('सदयवत्स वीर प्रबंध' से)

# अचळदास खीची

सिवदास गाडण

उत्तर दक्खिण देस, पूरब नइ पच्छिम तणा।
घडिया गउडाळिम घडव, नमिया सव्व नरेस॥१॥

तइ पतिसाह तणेह, पायाणउ पारस सुणि।
ढल्हळिया हैवाणवइ, गढपति गमे-गमेह॥२॥

तइ मचलतइ सूर, धूधळियउ, धर धमधमी।
गउडाळिम खीची दिसइ, चियउ पयाणउ सूर॥३॥

गुणइ बल गमतडा, एवड अतग पाइ।
गीर कवड्डी नइ गहइ, गढवर सविस विराइ॥१॥

गढवर-गाळइ गऊरियपउ, जहँ घघइ तहँ बाइ।
गीहइ पऊ्यग अइ गहइ, तउ दइ नविस बिराद॥
गउ दर सविस विराद, मान जाणवि मुहँगग।
गढवा धारणि धणिन, कोनि गउडाळिम धेरा॥
मइ कोय परिवार, निरगि महारउ हुइ वरि।
गढ न धरउ नरगिध, गळइ गढ्दप जउ गढवरि॥२॥

निरखइ अवट निहार, सुरी गुम्म गुरजइ वदइ।
दरणि दिगि आयर अमुर, पर दूजो परिवार॥१॥

वढि पाळट मरलोक, साचम साथ हमीर जिम।
गइ मनिवइ वांसा तणा, पिळइ राय मरलोक॥२॥

मिळगइ मेंठि बधार, वइ मिळाइ परिवार-वइ।
गढळउ वर गीरय गरउ, आइ वरवउ मदूवारि॥३॥

इणि परि सहस सहस दुइ तुट्टइ,
पगि पगि अडइ, न पग अवहट्टइ।
आलम अचळ सेन आवट्टइ,
कनय जिही रहि-रहि चसयट्टइ ॥१॥

आलम अचळेसरि अड्या, एही एव अथक्क।
पिडि जेता हीदू पडइ, तेता सहस तुरक्क ॥२॥

थाय धूजै गढ गागुरण, सिर धूजंतै सेस।
अचळ चलेवा आखडी, माथै उदय महेस ॥३॥

चहुवाणा घर रीत ए, रघ न नम्मै राण।
सो थयू जायै मेदनी, मो ऊभै चाव्हाण ॥४॥

घणा असुर घण घाइ पाडे अचळेसर पड्यउ।
आपण दुरग न अप्पियउ, जीवत जाइल-राइ ॥१॥

अनि पहि जिम गढ ऊठि, ऊमड करि आप्पउ नहीं।
लइ गोरी राउ गागुरण पड्या भोजवत पूठि ॥२॥

सातल सोम हमीर मन्ह, जिम जउहर जाळिय।
चळिय खेति चहवाणि, थादि कुळवट्ट उजाळिय ॥
मुगुत चिहुर सिरि मडि, थप्पि मठ तुळसी थासी।
भोजाउत भुजबळहि, करहि कग्गिर काळासी ॥
गढ खडि पडतो गागुरण, दिढ दाखे सुरताण दळ।
समारि नाम, आतम सरगि, अचळ वेवि कीधा अचळ ॥३॥

( अचळदास खीची री वचनिका' सू)

## समियाणो

पद्मनाभ

दळ चालता धरणी कापइ, सेष न झालइ भार।
सायर तणा पूर ऊळटिया, जेहवा रेळणहार ॥२/९३॥

वरगा ढोल नफेरी वाजइ, सायइ सहस अढार।
जागी ढोल नीसाण धमूकइ, सुणीइ जोयण बार ॥२/९४॥

पडइ त्रास भडवाय तुरक नइ, देस दहो दिसि नाठा।
घणा दिवस दळ मारगि चाली, माडआडि माहि पइठा ॥९५॥

खारा नीर सरोवर मोटा, दीठा वारू ठाम।
पहिला दळ समीयाणे आव्या, कीधउ पाद्रि मुकाम ॥९६॥

असपति राय इसूं मुखि बोलइ, आ गढ लीजइ धुरि।
पाडी भेळि मेल्हीइ थाणू, तउ जाईइ जाळहुरि ॥९७॥

लोक सवे नासी गढि चडीया, तुरके तळहटी रूधी।
गढ ऊपलिउ राहयणु वारू, भली सजाई कीधी ॥९८॥

माहि वरस बावरता पुहुचइ, धान तणा कोठार।
समीयाणे सातल सपराणउ, माहि भला झूझार ॥९९॥

सूत्रा खड चिणानी पूळी, कोरडि कडब अपार।
पाच सहस सातल नी वालि, बध्या चरइ तोखार ॥१००॥

काठी लूण बरस सु पुहुचइ, ऊपरि भली सजाई।
पहिनइ पुहरि बिपुहरे साझइ, साद पडइ भूजाई ॥१०१॥

पाणी भरिया सरोवर ऊपरि, नीठइ नहीय सगार।
जउ आकासि मेघ उळीचइ, तुहि न आवइ पार ॥१०२॥

गिरि ऊपरि गढ थाहर विसमो, विसमा पोळि पगार।
ऊचा कोठा घणी फारकी, वळी ति विसमा मार ।।१०३।।

चडी खिवळसइ सातलि जोयू, दीठउ दळ सुरताणो।
गढ तळहटीइ सरोवर पाळि, हाथी बाध्या आणी ।।१०४।।

ठामि ठामि साबाण सिराचा, डहिली नड एव घोई।
ऊचे थाभे वारगइ दीघी, तेह तणी परि जोई ।।१०५।।

अलब नेजा घणा मरातब, जोता पार न आवइ।
सातल नइ मनि साहण देखी, मोटउ अचिरज भावइ ।।१०६।।

कटक तणी सामगरी दीठी, सातलि करिउ बखाण।
धन्य धन्य दिन आज अम्हारउ, जे आव्यउ सुरताण ।।१०७।।

कोठइ कोठइ वरूया रखोपा, मोटा गडा चडाव्या।
थाहूआणि चिहु पासे भीति, भला यत्र मडाव्या ।।१०८।।

ऊतावळी ढीकुळी ऊपरि, पासे माडी मूकी।
आपापणे ठामि सहूइ नित, राति जागइ चउकी ।।१०९।।

ऊपरि थिका ऊतरइ हीदू, विलगइ रातीवाहि।
दीहइ वळी सइफळू माडइ, आवइ चउपट घाइ ।।११०।।

नित निन सूडी नइ,गढि आवइ, साव दळइ सुरताण।
नित भिडइ रोसाळा राउत, नइ सातल चहूआण ।।२/१११।।

( कान्हडदे प्रबध' सूं)

# वसन्त

अज्ञात कवि

पहुतीय शिवरति समरति, हव रितु तणीय वसंत।
दह दिसि पसरइ परिमल, निरमल थ्या दिसि अंत॥

वहिलूए गयइ हिमवति, वसति लयउ अवतार।
अलि मकरंदिहिं मुहरिया, कुहरिया सवि सहकार॥

वसंत तणा गुण गहगह्या, महमह्या सवि सहकार।
त्रिभुवनि जय-जयकार, पिका रव करइ अपार॥

पदमिनी परिमळ बहिकइ, लहकइ मलय समीर।
मयण जिहा परिपथीय, पथीय धाइ अधीर॥

मानिनी जन मनक्षोभन, शोभन वाउला वाइ।
निधुवन केलि कलामीय, कामीय अंगि सुहाइ॥

मुनिजन ना मन भेदए, छेदए मानिनी मानु।
कामीय मनह आनदए, कदए पथिकपराणु॥

वनि विरच्या कदलीहर, दीहर मडप माल।
तळीया तोरण सुदर, चदरवालि विशाल॥

खेलन वावि सुखाळीय जाळीय गुखि विश्राम।
मृगमद पूरि कपूरिहिं, पूरिहिं जळ अभिराम॥

रगभूमी सज कारीय, सारीय कुकुम घोळ।
सोवन सांकळ साधीय, बाधीय चपक डोळ॥

तिहां विलसइ ससि कामुक, कामुक हृदय चइ रंगि।
काम जिस्या अळवेसर, वेस रचइ सर अंगि॥

अभिनव परि सिणगारीय, नारीय मिलइ विसेसि।
चदनि भरइ षचोळीय, चोळीय मडन रेसि॥

चदन वन अवगाहीय, नाहीय सरवर नीर।
मद सुरभि हिमलक्षण, दक्षण वाइ समीर॥

नयरु निरोपीय ती वनु, जीवनु तणउ युवान।
वास भुवनि तिहा विलसइ, जलसइ अलिअल आण॥

नव यौवन अभिराम ति, रामति करइ सुरगि।
स्वर्गि त्रिस्या सुर भासुर, रामु रमइ वरअगि॥

कामुक जन मन जीवनु, ती वनु नगर सुरगु।
राजु करइ अवभगिहि, रगिहि राउ अनगु॥

अलिजन वसइ अनत, वसत तिहा परधान।
तरुअर वास निकेतन, केतन किशल सतान॥

वनि विलसइ श्रीय नदन, चदन चद चउ मीतु।
रति अनइ प्रीति सिउ सोहए, मोहए त्रिभुवन चीतु॥

('वसत विलास' से)

# जौहर

भाण्डउ व्यास

राय हमीर मीर नइ महड़,
हाथी मारि रने घोड़ै रहइ।
मेल्हइ मीर प्राण अनि बाग,
नव नव हाथी पाडइ टाण ॥२६१॥

सालिहोत्र गूधा सूधार,
मारीजइ तिणइ वार।
घरि घरि जमहर जोरै कीया,
राउळ पुण वळइ छइ तिहा ॥२६२॥

जमहर रा माता धूधळा,
राय अन्तेउर लागा बळा।
करि सनान पहिरीया चीर,
ऊगटणे लूहीया शरीर ॥२६३॥

सिरि सिंदूर सिंध तेडिया,
सथा मोंहि का टीका कीया।
नयणे काजळ सारी रेह
मुख तबोळ समाण्या तेह ॥२६४॥

काने कुंडळ झळकइ तिया,
सूरिज चंद री ऊपम जिया।
बाहइ बांध्या बहरखा भला,
सोवन चूडी झळकइ निला ॥२६५॥

आंगुळिया सोहइ मूदडी,
सवा लाख री हीर जडी।

कठ निगोदर उरि वर हार,
पाइ नेउरि झणझणकार ॥२६६॥
सोळह सिंगार सपूरण कीया,
नाचइ गावइ गाढी तीया ।
आपण पणा सभाळइ प्रिया,
बेऊ पक्ष ऊजाळइ त्रिया ॥२६७॥
देव तणी देवी हुई जिसी,
राय तणी अंतेउरि जिसी ।
ते देखि देव खळभळइ,
रायकुंवरी इसी परि बळइ ॥२६८॥
जाणे तिणि गढि पडिउ पुळउ,
लोक सहू को लागउ बळउ ।
अरथ भडार सजति समुदाय,
राछ पीछ बळइ तिणि ठाउ ॥२६९॥
सोना जडित बळइ पलाण,
जीणसाळ हथियार लगाम ।
पलक ढोल कमखानइ पाट,
षट तवाळु कचोळा खाट ॥२७०॥
करणाळी सोना रूपा तणी,
गरथि भरीय बळइ अति घणी ।
कुमखा मतीफा जुन पटकूल,
सउढि तळाइ तणा अति पूर ॥२७१॥
एकवीस भूमिया बळइ आवासि,
जाइ झाळ लागी आकासि ।
हणवति जेम पजाळी लक,
ते बीतक बीता रिणथभि ॥२७२॥

('हम्मीरायण' सू)

# प्रेम-संचार

गणपति कायस्थ

पुष्फि परिमळ ईक्षु रस, दूध माहि घृत जेम ।
सुणि प्रीऊडा, तिम माहरइ, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४५८॥

नील पटउले चोळना, रग तणी परि जेम ।
सुणि प्रीऊडा, तिम माहरइ, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४५९॥

त्वचा रक्त मज्जा माहि, अस्थि गूढ छइ जेम ।
सुणि प्रीऊडा, तिम माहरइ, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६०॥

तार यथा मणिहार माहि, रग तरुवर माहि जेम ।
सुणि प्रीऊडा, तिम माहरइ, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६१॥

घनजळ माहि श्यामिमा, रगनि रातडि जेम ।
सुणि प्रीऊडा, तिम माहरइ, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६२॥

नीरि नीर निरतरिउ, क्षीरि क्षीर ज जेम ।
सुणि प्रीऊडा, तिम माहरइ, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६३॥

लोहडा माहि लीन-थ्यु, पावक पसरइ जेम ।
सुणि प्रीऊडा, तिम माहरइ, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६४॥

स्वाद त्रियाणइ, तिम तमइ, जळ माहि शीत जेम ।
सुणि प्रीऊडा, तिम माहरइ, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६५॥

सोनू रूपू राम रस्या, अतर थाय न जेम ।
सुणि प्रीऊडा, तिम माहरइ, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६६॥

वाणी बावन वर्ण महि, जगन्नाथ युग जेम ।
सुणि प्रीऊडा, तिम माहरइ, पजरि पसरिउ प्रेम ॥४६७॥

('माधवानल कामकदला प्रबध' सू)

# पृथ्वीराज चौहाण

चंद

इक्कु बाणु पहुवीसु जु पइं कइंवासह मुक्कउ।
उर भिंतरि खडहडिउ धीर कक्खंतरि चुक्कउ॥
बीअं करि संधीउं भंमइ सूमेसर-नंदणु।
एहु सु गडि दाहिमओ खणइ खुद्दइ सइंभरि वणु॥
फुडु छंडि न जाइ इहु लुब्भिउ (यउ), वारइ पलकउ खल गुलह।
न जाणउं चंदबलद्दिउ (यउ), किं न वि छुट्टइ इह फलह॥१॥

अगहु म गहि दाहिमओ रिपु राइ खयंकरु।
कूडु मंत्रु मम ठवओ एहु जंबूय मिलि जग्गरु॥
सह नामा सिक्खवउं जइ सिक्खविउं बुज्झइ।
जंपइ चंद बलिद्दु मज्झ परमक्खर सुज्झइ॥
पहु पहुविराय सइंभरि धणी, सइंभरि सउणइ संभरिसि।
कइंवास विआस विसट्ठ विणु, मच्छि बंधि बद्धओ मरिसि॥२॥

(संकलित)

# चीरी

नरपति नाल्ह

चीरी लिखी धण आपणइ हाथि
	पडिया हो चालि हेडाऊ बय साथि
मान सउ बोमकउ गामनरउ
	पडिया रूडा चालिज्यो देस की सीम
नावडउ गिणज्यो न छाहडी
	म्हारी चीरी राखिज्यो जिउ थारउ जीव ॥८६॥

नाल्ह म्हावा दुख सहिमी चउण
	म्हे तउ पलिग तजयउ नइ परहर्यउ लूण
पान गोपारीय बिम वडइ
	मे जपमाळीय मइ जगउ नाह
दीह गिणता नह घस्या
	म्हावी धाग उडावता थाकीय जीमणी बाह ॥९१॥

जाणियउ हो राजा थारउ जाण
	दुइ रे माया मिलउ एक पराण
सा कयउ दूरि-थी मेल्हियइ
	मूळ थी रे वेटीय सील जजीर
जोवन रागउ मइ चोर जिउ
	पगि पगि सो लइ पहूच रे पाप
दगि भगि उळगाणउ हूउ
	अवर भगि होयउ वाळव माप ॥९२॥

पडिया अइ न बार्गायउ प्रीय बइ देसि
	हुउ रि वहउ सौग रिउ रि बहुसि
एर मग पगि आवज्यो
	थारी बाट बुहारू गिरह पा केडि

जो मरि जळ उलट्यउ
थाग न पावु घरह नरेस ॥६३॥
पडिया तिम कहेज्यो जिम प्रिय नि रिसाइ
साघण तुझ विण अन्न न खाइ
कुहाणी फाटउ रे कचुयउ
खोपरि फाटउ तु धण केरउ चीर
जिम दव दाधी लाकडी
तू तउ उवइगउ रे आविज्यो नणद का वीर ॥६४॥

कहि नइ गोरी थारा प्रीय रा अहिनाण
थोडा थोडा म्हानय दे सहिनाण
किण उणहारइ सारिखउ
लहुडा देवर कइ उणहारि
एह गोरउ प्रीय सामळउ
सीस तिलक नितु नवइ रे विहाण
उरि चौडउ कडि पातळउ
ऊचउ रे जाडउ वडि जमडाढ
लाखा माहि पिछाणिजइ
पडिया प्रीय छइ एह सहिनाण ॥६५॥

धोरी जनोइय दीन्ही छइ साँठ
सहम सोनइया बाध्या छइ गठि
बरम दीहा कउ र सवळउ
प्रीय घणउ जीमज्यो जिम पगि हुवइ प्राण

पहिरज्यो सावरी पाणही
चिहु घडिया माहे तू देइ मेल्हाण ॥६६॥

वाहुडि गोरडी तू घरि जाह
हू लेकरि आवउ थारडउ नाह
सउण ते बधिया गाठडी
सात सोपारीय दीधीय छोडि
वोलियउ छउ ते निरवाहिज्यो
पाय लागीय धण वे कर जोडि ॥६७॥

# शरणागत

बहादर ढाढी

(दूहा)

मैमद नै जगमाल रै, ज्बर वैर ओ जाण।
आया सरणै जोईया, सिंध छोडै साहिवाण ॥१॥

मलीनाथ बधु मुदै, वीरम करै सु बात।
अतहपुर वीरम त्रिया, मागळियाणी हात ॥२॥

(नीसाणी)

माल तणै घर बार मझ, वीरम वरदाई।
सारो वीरम रो सरब, चित मगळ थाई।
मिळिया वीरम जोईया, मेळप दरसाई।
आया ढोडी ऊपरै, सामल सारा ई।
मागळियाणी सू दलो, भल हो धरम-भाई।
सात पोसाखा सात मी, मोहरा गुजराई।
देस विसू मासू वणै, सूखा सिपवाई।
आया सरणै आप रै, ओडी उतराई।
दलै कैयो इण देस मे, वैसा मै बाई।
वीरम रा मै सापरत, सह कोय सिपाई।
अरज करो थे आप सू, मो जाणै भाई।
रावळ सरणै राखसी, ववो विरदाई।।

(दूहा)

मागळियाणी महल री, वीरम मानी बात।
जरा दबाया जोईया, सुख पायो सब साथ ॥१॥

मुजरो रावळ माल सू, वीरम दियो कराय।
माल कैयो इण मुलक मे, बसोखान थे आय ॥२॥

दलो रहे दरवार मे, जोईयो आठू जाम।
जगा मझ भिडिया जवन, काढे मोटा काम ॥३॥

तलवाडे थाणो तठै, पमग रहे सो पाच।
माल धणी घर मायनै आवण दिय न आच ॥४॥

(नीमाणी)

सिध दिली सुरताण री, फोजा चढ आई।
सौंपो दलो जोईयो, भड सातू भाई।
वीरम बोयो वीरवर, वको वरदाई।
दू मायो, नह दू दलो, वर घर सिर आई।
एण जनानी ऊपरा, कमरा कसवाई।
बीडगा चढिया वीरवर, समसर समाई।
केता दुसमण काट कर, फोजा फिरवाई।
मीर मेई रिण मारिया वीरम वरदाई।
आई न जोईया ऊपरै, तिल एक तवाई ॥

(ढाढी बहादर कृत नीसाणी सू)

# मरवण

लोकगाथा

गति गंगा, मति सरसती, सीता सीळ सुभाइ।
महिला सरहर मारुई, अवर न दूजी काइ ।।१।।

रमणी खमणी बहुगुणी, सुकोमळी जु सुकच्छ।
गोरी गंगा नीर ज्यूं, मन गरवी, तन अच्छ ।।२।।

रूप अनूपम मारवी, सगुणी नयण सुचंग।
साधण इण परि राजिजइ, जिम सिव-मसतक गंग ।।३।।

गति गयंद, जंघ केळिग्रभ, केहरि जिम कटि लंक।
हीर डसण, विद्रुम अधर, मारू-भृकुटि मयंक ।।४।।

मारू देस उपन्नियां, ताह्का दंत सुसेत।
कूंझ-बचां गोरंगियां, खंजर जेहा नेत ।।५।।

डीभू लंक, मराळि गय, पिक-सर एही वाणि।
ढोला, एही मारुई, जेहा कुंझ निवाणि ।।६।।

मारू-लंक दुइ अंगुळां, कर नितंब उर मंस।
मल्हपइ मांझ सहेलियां, मानसरोवर हंस ।।७।।

चंपावरणी नाक सळ, उर सुचंग विधि हीण।
मंदिर बोली मारुवी, जाणि भणक्की वीण ।।८।।

आदीताहू ऊजळो, मारवणी मुख-ब्रन्न।
झीणा कप्पड पहिरणइ, जाणि झबक्कइ सोब्रन्न ।।९।।

भमुहा ऊपरि सोहलो, परिठिउ जाणिक चंग।
ढोला, एही मारुवी, नवनेही, नव रंग ।।१०।।

मृगनयणी मृगपति मुखी, मृगमद तिलक निलाट।
मृगरिपु कटि सुदर वणी, मारू अइहइ माट ॥११॥

थळ भूरा, वन झखरा, नही मु चपउ जाइ।
गुणे मुगधी मारवी, महवी सहु वणराइ ॥१२॥

सदेश

ढाढी, एक सदेसडउ, प्रीतम कहिया जाइ।
साधण बळि कुइला भई, भमम ढढोळिसि थाइ ॥१॥

ढाढी, जे प्रीतम मिलइ, यू कहि दाखवियाह।
पजर नहिं छइ प्राणियउ, था दिस झळ रहियाह ॥२॥

ढाढी, जे राज्यद मिलइ, यू दाखविया जाइ।
जोबन हस्ती मद चढ्यउ, अकुस लइ घरि आइ ॥३॥

ढाढी, एक सदेसडउ, कहि ढोला समझाइ।
जोबन आवउ फळि रहउ, साख न खावउ आइ ॥४॥

ढाढी, जइ साहिब मिलइ, यू दाखविया जाइ।
जोबन कमल विकासियउ, भमर न बइसइ आइ ॥५॥

ढाढी, एक सदेसडउ, ढोलइ लगि लइ जाइ।
कण पाकउ, करमण हुअउ, भोग लियउ घरि आइ ॥६॥

पथी, एक सदेसडउ, लग ढोलइ पैहचाइ।
विरह बाघ वनि तनि वसइ, सेहर गाजइ आइ ॥७॥

पथी, एक सदेसडउ, लग ढोलइ पैहचाइ।
जोबन खीर-समुद्र हुइ, रतन ज काढइ आइ ॥८॥

पथी, एक सदेसडउ, लग ढोलइ पैहचाइ।
जोबन जायइ प्राहुणउ, वेगइ रउ घर आइ ॥९॥

फागुण मासि वसत रत, आयउ जउ न सुणेसि।
चाचरि कइ मिस खेलती, होळी झपावेसि ॥१०॥

जउ साहिब तू नावियउ, मेहा पहलइ पूर।
थिचइ वहेसी वाहळा, दूर स दूरे दूर ॥११॥

जइ तू ढोला नावियउ, वाजळिया री तीज।
चमक मरेसी मारवी, देख खिवता बीज ॥१२॥

वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजाण।
तुझ विण धण विलखी फिरइ, गुण विण लाल कमाण ॥१३॥

वासर चित्त न वीसरइ, निसि भरि अवर न कोइ।
जइ निद्रा भरि भोगवु, तउ सुपनतरि सोइ ॥१४॥

भरइ, पळट्टइ, भी भरइ, भी भरि, भी पळटेइ।
ढाढी हाथ सदेसड़ा, धण विललती देइ ॥१५॥

('ढोला मारू रा दूहा' सू)

# ऊजळी

लोकगाथा

टोळी सू टळताह, हिरणा मन माठा हुवै।
वाल्हा वीछडताह, जीणो विस विध, जेठवा ॥१॥

जातो जग ससार, दीसै सारा नै दरस।
भव-भव रो भरतार, जिको न दीसै जेठवो ॥२॥

जळ पीधो जाडेह, पाबासर रै पावटे।
नैनकिये नाडेह, जीय न धापै, जेठवा ॥३॥

पाबासर पैठेह, हसा भेळा ना हुआ।
बुगला ढिग बैठेह, जूण गमाई, जेठवा ॥४॥

जोडी जग मे दोय, चकवै नै सारस तणी।
तीजी मिली न कोय, जो-जो हारी, जेठवा ॥५॥

ताळा सजड जडेह, कूची ले काने थयो।
ऊघडसी आयेह, जडिया रहसी, जेठवा ॥६॥

तो बिन घडी न जाय, जमवारो किम जावसी।
बिलखतडी बीहाय, ओगण करग्यो, जेठवा ॥७॥

चकवा सारस बाण, नारी-नेह तीनू निरख।
जीणो मुसकल जाण, जोडी बिछड्या, जेठवा ॥८॥

जग दीसै जाताह, वाता ए रहसी वळे।
हित लेगो हाथाह, जीवण रो सुख, जेठवा ॥९॥

नैणा निजर निहार, तीन लोक देख्यो तुरत।
अबळा रो आधार, जको न देख्यो, जेठवा ॥१०॥

सारस मरता सोय, सारसणी मरमी सही।
लाखीणी आ लोय, जग में रहसी, जेठवा ॥११॥

धरती अम्बर धार, जळ थळ मे रैवै जठै।
अवळा रो आधार, जोती फिरू मैं, जेठवा ॥१२॥

आख्या उणियारोह, निपट नहीं न्यारो हुवै।
प्रीतम मो प्यारोह, जाती फिरू मैं, जेठवा ॥१३॥

मोरा मन माणेह छड लोरा आवै जदै।
जिवडो मो जाणेह, जाऊ किण दिस, जेठवा ॥१४॥

कोयल काळी कूक, सालै मो उर मे सदा।
हिवडै हाने हूक, जग म मिलै न जेठवो ॥१५॥

नैणा लागो नेह उर अतर माही वसै।
सजना साच सनेह, जुग म मिळै न जेठवा ॥१६॥

पानासर री पाज, हसो हेरण हालिया।
कोय न सरियो काज, जाणा मूनी, जेठवा ॥१७॥

तू पटकी पाताळ, ऊची स आकास सग।
पगघ्यो घण पाताळ, जीव उठू, रे जेठवा ॥१८॥

('ऊमळी जेठवै रा सोरठा' मृ)

# नारायण

अलूनाथ कविया

### कवित्त (छप्पय)

गोपनार चितहरण, प्रेम लच्छणा समप्पण।
कुंजबिहारी क्रस्ण, रास व्रंदावन रच्चण॥
गोवरधन ऊधरण, ग्राह मारण गज-तारण।
जुरासिंध सिसपाळ, भिडे भूभार उतारण॥
जमलोक दरस्सण पग्हरण, भौ भग्गो जीवण-मरण।
ओ मत्र भजो निस दिन अलू, भिमर नाथ असरण-सरण॥१॥

महाराज गजराज ग्राह, उग्रह्यो सनेही।
करि आण्यो वयकुंठि, दिव्य नारायण देही॥
दधि भारथ कौरवां, अतर वेला उत्तारे।
रौद्र दुजोधण सभा, लाज द्रोपदी वधारे॥
सुदरसण ससख गद्दा पदम, अंबर पीत वियारि भुव।
गोविंद वेग वाहर गरुड, हरि जगनाथ पुकार हुव॥२॥

ब्रह्म वेद उच्चरैय, गीत तुंबरू गावै।
रमा अवसर रमैं, वीण सरसत्ती वजावै॥
सिव अवलोवण करै, इंद्र सिर चम्मर ढाळै।
व्यास उकति वरनवै, पाव गंगा पख्खाळै॥
ससि सोळह कळा अम्रित स्रवै, सूरिज कोटि समधरै।
अपरम्म तणां सिर ऊपरै, कमला आरत्ती करै॥३॥

मोर मेर पर चुगै, चुगै पछी फळ तरवर।
गज वजळीवन चुगै, चुगै डिग हंस सरव्वर॥
अनड चुगै आकास, चुगै पाताळ भुयगम।
केहर वन मे चुगै, चुगै नित ठाण तुरगम॥
जीव श्रो जतु सब ही चुगै, गाठै महा गरत्थ है।
चिन्ता म कर ना-चिन्त रह, देणहार समरत्थ है॥४॥

(सकलित)

एक वेलि तुवडी लग्ग फळ तेय तिण्णि वण।
जि विवि चढी धाणुक्क हत्थि कड्ढति रुहिर तन॥
जि विवि चढी झीवरह पिक्खि तोडिय तुबाहळ।
ते तारहि सुरनदी नीर निज्झर खाळाहळ॥
सग्रही जि किवि गायण जणह, वीण नादि पुरति घण।
सघपत्ति राय डुगरु कहइ, सगति सरिसा होहि गुण॥५॥

गव्वु म करसि गवार, गव्व रावण रण खडिय।
गव्वु कियइ नरसिंघ काज देवळ सिल भडिय॥
गव्वु कियइ गुण गळइ, गव्वु कीयउ भउ भजइ।
वडा वडी पिरथमी नद, कइ हवइ वज्जइ॥
परहरहु गव्वु सज्जण सयल, गव्वि म कोइ होवइ अचळु।
श्री सघ मिळहि डुगरु कहइ, नवहु जेम तरवरु सफळु॥६॥[1]

('डूगर बावनी' सू)

१ 'डुगरु कहइ' प्रयोग सू ओ भ्रम नी हुवणो चाहिजै कै काव्य रो रचनाकार डूगरसी है। असल मे रचनाकार तो पदमनाभ ही है पण सम्मान मे वो आप रै आश्रयदाता डूगरसी रै नाम रा प्रयोग कर दियो है। दूजा भी कई आश्रित कवि इणी भांत रा प्रयोग कर्‌या है।

—सम्पादक

## रातीवाहो

सूजो वीठू

(छद पाधडी)

बळिवन्ति जइति वावाडि बोलि,
ढोइया थाट बाजतइ ढोलि ।
आरभ राम जइतसी अत्ति,
आवियउ मीर सिरि आध रत्ति ॥३७२॥

राठउडि रेवन्त रंगघ,
विन्छूट जाणि सङ्कूळी सगघ ।
पतिसाह सेन हुअतइ पगेहि,
मायइ असि षाडिय मारुएहि ॥३७५॥

परक्खेइय तेजी नाठि विज्ज,
भाइऐ किया भेञा भडिज्ज ।
सागुलइ राग बागा समोहि,
साजियउ तुरी सामहइ लोहि ॥३७६॥

सग्राम धीरि सामहइ सारि,
मेल्हियउ तुरी भोगर मझारि ।
जइतमी राइ मच्चावि अग,
अम्मळीमाणि टाळिय न अग ॥३७७॥

रेवन्त घातियउ जइत राइ,
नवसहस धणी रूम्नह नियाइ ।
खेड रइ राइ खोहणि खधार,
ढोयउ सरूप वाजती धार ॥३७८॥

दळि दाणवि जइत सरूप दीठ,
नेठाहि धीरि नाखिय निवीठ ।
हिन्दुआ तुरक्का हुविय हक्क,
करिमाळ वाजि कळळिय कटक्क ॥३७९॥

पडियाळ घूणि पउरिस्सि पूरि,
गाजणइ तणइ पइठउ गरूरि।
खुरिसाण विवाणे खेड खागि,
वाजिया घाउ ऊडो वजागि ॥३८०॥

खाफरा जइत वाहइ खडग्ग,
वासदे जाणि वस्ने विलग्ग।
ऊलरा सेनि जइतउ अबीह,
सीधरे पईठउ जाणि सीह ॥३८१॥

कूभायळ भाजइ मीर कघ,
ऊकुरड चडइ दळ अग्निबघ।
आवद्धि टोपि ऊमरी अग्गि,
खोटिया घाट बेवे खडग्गि ॥३८२॥

गहगहिय घाट बेऊ गरोठ,
राठउडि रउद्रि वाजियउ रीठ।
सूरा सघीर वाजइ सरोस,
पडिकाळे ऊडइ जिरहपोस ॥३८३॥

राठउडा हाथे रिम्म राह,
समरइ मीर सहिता सनाह।
जरदाउळि फूटइ सेल ब्रीह,
अरि उरे अणी ठेलइ अबीह ॥३८४॥

घण घाइ मुगुल्ला घडिय घट्ट,
रहचिवा यट्ट हुइ आहरट्ट।
सेलार सहइ सारीर सार,
भाले भभार पट्टे पहार ॥३८५॥

ताइया तणे वाजइ तियग्ग,
ऊनरइ गात हूता अलग्ग।
राठउड बिडइ रिणि रससलुद्ध,
सारे मुगुल्ल हुअइ विसुद्ध ॥३८६॥

अइराकि अणी पाया अठाहि,
मतवाळा घूमइ मीर माहि।
वाहइ खडग्ग बेमें विरत्त,
रिणठाह रत्त आवद्ध रत्त ॥३८७॥

रउद्र दळ रहच्चइ जइत राउ,
होहू कि मेह बाजइ हुलाउ।
ताइया उरे घइ कूत तेह,
मारूअउ राउ मातउ कि मेह ॥३८८॥

धड़हड़इ ढोल घूजइ धरत्ति,
पड़ियाळगि वरसइ खेड़पत्ति।
धीवाहर राजा इंद वग्गि,
खाफरा सिरे खिवियां खड़ग्गि ॥३८९॥

पतिसाह फउज फूटन्ति पाळि,
ब्रह्मण्ड जइत गाजइ विचाळि।
अम्बहर जइत वरसइ असवार,
धुड़किया मीर मुहि खग्ग धार ॥३९०॥

सार जळ मेछ नह सहइ सक्कि,
करिमाळ काह पड़ियउ कटक्कि।
धूधहर वरसता धन्न धन्न,
गुरिजा निहाइ बाजइ गिगन्न ॥३९१॥

खुरिसाण सीसि वाजइ खड़ग्ग,
ऊभरइ बूर आकासि लग्ग।
मेहता विलम्बइ बात वार,
धउसिया मीर मुहि खग्ग धार ॥३९२॥

मरदिया जेम जगमल्ल मल्ल,
ढळोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल।
रळतळइ रत्त सोखइ सपत्त,
सभळइ सत्त विसथरइ वत्त ॥३९३॥

सीराम जइत सारे निसग,
लोहड़े लसक्कर लियइ लक।
राठउड़ राउ मळवळइ रोम,
वावणउ विलागउ जाणि वोम ॥३९४॥

('राउ जइतसी रउ छंद' सू)

## पद

### मीराबाई

म्नैं चाकर राखो जी, स्याम म्नैं चाकर राखो जी ।। टेक ।।
चाकर रहसू, बाग लगासू, नित उठ दरसण पासू।
बिंद्रावन की कुंज-गळिन में, गोविंद लीला गासू ।।
चाकरी मे दरसण पाऊं, सुमिरण पाऊं खरची।
भाव-भगति जागीरी पाऊं, तीनू बाता सरसी ।।
मोर-मुकुट पीताम्बर सोहै, गळ बैजंती माळा।
बिंद्रावन में धेन चरावै, मोहन मुरळी-वाळा ।।
हरे-हरे नित बाग लगाऊं, बिच-बिच राखू क्यारी।
सांवरिया का दरसण पाऊं, पहर कुसुमी सारी ।।
जोगी आया जोग करण कू, तप करणे सन्यासी।
हरी भजन कू साधु आया, बिंद्रावन का वासी ।।
मीरा के प्रभु गहिर गंभीरा, सदा रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दरसण दीन्हे, प्रेम नदी के तीरा ।।

( २ )

है री मैं तो दरद दिवानी, म्हारो दरद न जाणै कोय ।। टेक ।।
घाइल की गति घाइल जाणै, की जिण लाई होइ।
जौहरि की गति जौहरि जाणै, की जिण जौहरि होइ ।।
सूळी ऊपर सेज हमारी, किस विध सोवणा होइ।
गगन मंडळ पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होइ ।।
दरद की मारी बन-बन डोलूं, बैद मिल्या नहिं कोइ।
मीरा की प्रभु पीर मिटैगी, जद बैद सांवरियो होइ ।।

( ३ )

मैं तो गिरधर के घर जाऊ।
गिरधर म्हारो साचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊ ।।
रैन पड़े तब ही उठि जाऊ, भोर भये उठि आऊ।
रैन दिना वा कै सग खेलू, ज्यू त्यू ताहि रिझाऊ ।।
जो पहिरावै, सो ही पहिरू, जो देवै सो खाऊ।
मेरी उण की प्रीति पुराणी, उण विन पल न रहाऊ ।।
जहा बैठावे तित ही बैठू, बेचै तो बिक जाऊ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, वार-वार बलि जाऊ ।।

( ४ )

म्हारा ओळगिया घर आया।
तन की ताप मिटी सुख पाया, हिल-मिल मगळ गाया ।।
धन की धुनि सुनि मोर मगन भया, यू मेरै आणद छाया।
मगन भई मिलि प्रभु अपणा सू, भौ का दरद मिटाया ।।
चद कू देखि कमोदणि फूलै, हरख भया मेरी काया।
रग-रग सीतल भई मेरी सजनी, हरि मेरै महल सिधाया ।।
सब भगतन का कारज कीना, सो ही प्रभु मैं पाया।
मीरा विरहणि सीतल होई, दुख-दुद दूरि नसाया ।।

( ५ )

मेरे तो गिरधर गोपाल, दू सरो न कोई।
जा के सीस मोर-मुकुट, मेरो पति सोई ।।
छाडि दई कुळ की कानि, कहा करिहै कोई।
सतन ढिग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई ।।
असुवन जळ सीचि-सीचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैलि गई, आणद-फळ होई ।।
दूध की मथनिया बडे, प्रेम से बिलोई।
दधि मथि घृत काढि लियो, डारि दई छोई ।।
भगति देखि राजी भई, जगत देखि रोई।
दासि मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोही ।।

(सकलित)

# नृत्य-विलास

*कुशळलाभ (वाचक)*

कामकदळा नाटक करइ, माधव मनि अपछर समरइ ।
आप पासि बइसारिउ भूपि, निरखइ कामकदळा रूपि ॥१९३॥

चपक वर्णं सकोमल अग, मस्तक वेणी जाणि भुयग ।
अधर रग परवाळी वेलि, गयवर हस हरावइ गेलि ॥१९४॥

नाक जिसी दीवा नी सिखी, बाहि रतन जडित बहिरखी ।
सीसफूल सोवन राखडी, कचनमय घडि रतने जडी ॥१९५॥

गळि एकाउळि नवसर हार, ककण नेउर रुणझुणकार ।
मुख जाणि पूनिम-नू चद, अधर वचन अमृतमय बिंद ॥१९६॥

पीन पयोधर कठिन उतग, लोचन जाणि त्रस्त कुरग ।
भालि तिलक, सिरि वेणीदड, भमह वक मनमथ कोदड ॥१९७॥

कोमल सरल तरल अगुळी, दत जिस्या दाडिम नी कुळी ।
पळकइ चूडी सोवन वणी, मुद्रघटिका सोहामणी ॥१९८॥

केसरि सिह जिस्यु कटि मध्य, रतनजडित कटि मेखल बध ।
जघ जुयल करि कदळी थभ, अभिनव रूपिइ रमणी रभ ॥१९९॥

भागइ चदन केसर घोळि, अधर दसण रगित तबोळ ।
अजन-सिउ अजित आखडी, जाणि विकच कमल पाखडी ॥२००॥

सज्या तेणि सोळह सिणगार, नाटिक अवसरि हर्ख अपार ।
ते माधव निरखइ वळि-वळि, लागउ प्रेम विरह व्याकुळो ॥२०१॥

('माधवानळ कामकदळा चउपई' सू)

# सती ऊमांदे

आशानन्द बारहठ

रोपवि काठ सुगध, अगर चन्दण मळियागर।
परमळ धूप कपूर, घिरत सीचै वैसन्नर॥
मिळे कोड तैंतीस, सूर उच्चिस्रव साहे।
करन वात अखियात, माल राजा पडगाहे॥
सिस बिम्ब जेम ऊमा सती, कमळ बसे सोळह कळा।
गगेव राव, रावळ करण, आज करे बिहु ऊजळा॥१॥

जेण लाज हम्मीर मुवो, जूझे रिणथभर।
जेण लाज पातल्ल मुवो, पावागढ ऊपर॥
जेण लाज चुडराज मुवो, नागौर तणै सिर।
कान्हडदे जाळोर अनै, दूदो जेसलगिर॥
बड घरा लाज राखण वडी, करण सधू खत्रवट करे।
सो लाज काज ऊमा सती, मालराव कारण मरे॥२॥

गुरड चढी गोविन्द, साढ चढ आवो सकर।
इन्द्र चढी इण वार, पीठ एरावत मद्धर॥
हस चढी मुर जरठ, चढी देवी सिंघाणै।
चढौ सूर सपतास, चढी अपछरा विमाणै॥
सापडे सूर मुख सामही, धुन जेही साचै धडै।
सुर इता आज आवो सती, चढ आजस काठा चढै॥३॥

सज सोळा सिणगार, सत्तव्रत अग अग साहे।
अरक बार मुख ऊग, नीर गगाजळ नाहे॥
चीर पहर, रस चढे, केस वेणी सिर खुल्ले।
देती परदक्खणा, हसगत राणी हल्ले॥
मुर भुवण पैस पहुता सरग, साम तणो मन रजियो।
रूसणो मालदे राव सू, भटियाणी इम भजियो॥४॥

सार सचील सिनान, दान सोव्रन विप्रा दे।
धारे चित निज धर्म, पखा ऊजळा करे बे॥
मेट मोह मृतलोक, काठ भक्खण मझ पेसै।
महा झाळ मगाळ, माहि सिद्धासन बेसै॥
कर काळ दोप निकळंक करण, तवजे तिण वारा तणो।
सुर-भुवन पधारे साम सू, राणी भागे रूसणो॥५॥

## वाघजी रा दूहा

कूकै कोयलियाह, मीठा बोलै मोरिया।
राचै रग रळियाह, बागा बिच्चै, बाघजी॥१॥

कस्तूरी झखी भई, केसर घटियो बाघ।
सब वस्तू सूघी थई, गयो बटाऊ बाघ॥२॥

बाघा, आव वळेह, धर कोटडे तू धणी।
जासी फूल झडेह, बास न जासी बाघ री॥३॥

ठोड़-ठोड़ पगदोड, करसा पेट ज कारणै।
रात दिवस राठौड, वीसरसा नह बाघ नै॥४॥

यई मसाण थयाह, आतम पद पूगा अलख।
गगा हाड गयाह, वीसरसा जद बाघ नै॥५॥

हूक कळेजे माय, दाटी पण दूणी दगै।
घूघळिया घड माय, बरळा ऊठे, बाघजी॥६॥

हाल हिया सिव बाडिया, पग दे पावडियाह।
बाघै सू वार्ता करा, गळ दे बाहडियाह॥७॥

(संकलित)

# हालां-झाला रा कुंडळिया

ईसरदास रोहड़िया

एकौ लाखा आगमैं, सीह कहीजै सोय।
सूरा जेथी रोडियैं, कळहळ तेथी होय॥
कळळ हूकळ अवसि, खेति सूरा करै।
धीरपै सुहड रिण, चलण धीरा धरै॥
आगि अज्जागि, जसवत अकळावणौ।
खाग बळि एकलौ, लाख दळ खावणौ॥१॥

सादूळौ आपा समो, बियौ न कोय गिणत।
हाक विडाणी किम सहै, घण गाजियै मरत॥
मरै घण गाजियै जिकौ सादूळ महि।
सत्रा चा ढोल सिर सकै किम जसो सहि॥
वयण घण सांभळै रहै किम बीसमो।
सुपह सादूळ कुणि गिणै आपा समो॥२॥

सीहणि हेकौ सीह जणि, छापरि मडै आळि।
दूध विटाळण कापुरस, बोहळा जणै सियाळि॥
घणा सियाळि जे जणै अबक घणा।
तौ हि नह पूजवै पाण केहरि तणा॥
धूणि खग ऊठियौ, अभग साम्हो धणी।
सीह जसवत जिसौ, हेक जणि सीहणी॥३॥

केहरि मरू कळाइया, रुहिर ज रत्तडियाह।
हेकणि हाथळ गै हणै, दत दुहत्था ज्याह॥
दत दुहत्था ज्याह हाथिया सवळ दळ।
आवघा हरहरा चूर करणौ अकळ॥
रोळसी खळदळा चखा रातबरो।
कळाया मरू त्या जसौ गज केहरी॥४॥

केहरि केस भमग मणि, सरणाई सुहडाह।
सती पयोहर क्रपण धन, पडसी हाथ मुवाह॥
मूवा हिज पडसी हाथ भमग-मणि।
गहड सरणाइया ताहरै गै डसणि॥
काळ ऊभो जसौ सकै नेडा करी।
कुणि सती पयोहर मूछ ले केहरी॥५॥

मरदा मरणो हक्क है, ऊबरसी गल्लाह।
सापुरसा रा जीवणा, थोडा ही भल्लाह॥
भला थोड जीविया नाम राखै भवा।
खेल ऊभा रवै भागला सिर खवा॥
भळ चढै जोय चद जस नामो नरै।
मरद साचा जिकै आय अवसर मरै॥६॥

## ब्रह्म-दर्शन

छतो थयो माहव, गूघट छोड।
ठयो तूं ठावो ठाविय ठोड॥
मुणा किम जाग असी जगमूर।
नही जिळ माझ तुहारोय नूर॥२६५॥

जळा-थळ थावर जगम जीय।
किये हरि, तुझ पखै नही होय॥
मकोडिय कीट पतग मुणाळ।
भिखण तु हीज तु हीज भुआळ॥२६६॥

सोही भरपूर रह्यो घणसाम।
रमै घट माझ सदा तुहि राम॥
हरी तू बणाविय बाजिय हद्द।
बाजीगर तूझ वडो हिं बिहद्द॥२६७॥

अछै सब माझ तु आप अळूझ।
गोविंद, तुहाळ लधो हिव गूझ॥
मुकद, म पैठ पडद्दा माय।
ठाबो हो कीध सरब्बस ठाय॥२६८॥

सबै असथान हो देखत साइ।
माणस्सा देवत नागा माहि॥

इंडज्ज सिदज्ज जरा उदभिज्ज।
माया सब तुझ न भूलव मुज्झ॥२६६॥

सुरत्त तु होज तु होज सबद्द।
मरद्द महेळिय माहि मरद्द॥
कृतात तु नृत्त-क्रिडा तुहि काम।
रमाड म पग्ग लग्यो हिव राम॥२७०॥

म राख पडद्दोय आडो मुझ।
जिया निरखा तिय दाखव तुझ॥
विधोविध दीठौ माझ विभूत।
धुताङ्य मूक परी हिव धूत॥२७१॥

प्रभु, तू पाणिय तू ज पवन्न।
गरज्जत भोम पियाळ गगन्न॥
इळा तय तू ज उडीयण अभ्भ।
पुणगा मेघा माहि परम्भ॥२७२॥

रमैं तू राम जुवा धरि रग।
तु हीज समद्द तु हीज तरग॥
अणु परमाणु तिहारो हि अस।
हिवं म सताय छतो यइ हस॥२७३॥

जड्यौ हिव ओझळ छोड जिवन्न।
पेखा तुव डाळाय माखा पन्न॥
अजाण रि आगळ रे तु अजाण।
जाणीता पाहि न अतर जाण॥२७४॥

लगाड गळै जनि अतर लाय।
वहेलो थाय नही सहवाय॥
वसीकर सब्ब तुहाळो वेस।
नही तू जेय स दाखव नेस॥२७५॥

लख्यो हिव रूप प्रछन्न न लाय।
मुरार, प्रतक्ख हि बाहर माय॥
ठगारा ठाकर हेकट थीय।
पढ्द्दो नाख परो हिव पीय॥२७६॥

जोयो हो राम विमासिय जेम।
तना घट मा हरि, दीठन्न तेम॥
गळी गयो भ्रम्म छुटी मन गंठ।
करो हरि, बात लगाडिय कंठ॥२७७॥

त्रिणो नह पेखा आडो तुझ।
मुखामुख सेथ करावउ मूझ॥
त्रिभंगिय, हेक हुआ हम-तम्म।
प्रपोटाय अब तणी परिभ्रम्म॥२७८॥

समाणोय तूझ महि घणसाम।
रघूबर, माहरो आतम राम॥
महारउ ठाकर बैठो मांहि।
पुजावत आपहि आपहि पाहि॥२७९॥

('हरिरस' सूं)

# राव अमरसिंघ राठौर

केसौदास गाडण

(गीत)

गूदा मास रा गिळती रिण गटका, चळवे रगी मुचाळी ।
विच अवखास वहै वळवळती, अमर तणी अणियाळी ॥१॥

सुभियाणा खाना मुरताणा, थाटा भजण सारी ।
फोरी फिरै घणा फोडतो, काठहड़ै ज कटारी ॥२॥

माल्है गोसळतन खाना मझि, उर खणती अनवक्षा ।
जमदढ तूझ तणी जोधपुरा, धड़ खणती धजवधा ॥३॥

विकराळी दरबार विचाळै, खरखरती खागाळा ।
मालहरा माल्है प्रतियाळी, भखती लील भुवाळा ॥४॥

सोनहरी दीवाण दिलेसर, रायजादा हुई राजी ।
गजन-तणै गिळिया गजबधी, ऊपजती आ गाजी ॥५॥

## बलूजी चांपावत

(गीत)

बिजड़ ऊठियौ धूण गिरमेर रौ बहादर,
पछै म्हैं कदे अवसाण पावा ।
अमर नै सुरग दिस मेल नै एकलौ,
आगरे लड़ेवा कदे आवा ॥१॥

अम्हैं तो अमर राजा तणा ऊमरा,
जुड़ेवा पार की छठी जागा ।
बोलियौ बलू पतसाह रै बरोबर,
मारवै राव रौ वैर मागा ॥२॥

केसर्‌या माहि गरकाब बागौ करे,
सेहरौ बाध हलकार साथै ।

अमर री भतीजौ तोल खग आखवै,
बलू अर आगरौ हुवा बार्थं ॥३॥
पटा नै नांखि भिड साह सू चटापट,
काम नवकोट साचो कमायो।
याद कर साह सू वैर नृप वोढियो,
अमर नै मुहर करि सरग आयो ॥४॥

(सकलित)

## नीसाणी

सूर विरत ससार सू, रत्ता रहमाणा।
काची माया कारणै, भ्रम मूढ भुलाणा।
विपया कामण कनक कै, क्या लोभ लुभाणा।
मौनी गाफिल हुय रह्या, खूनी जुलमाणा।
काची काया काजसी, कूडा कमठाणा।
साहिब नाम सभाळदै, क्या लगै नाणा।
जे सब वरसँ जीवणा, दिन हेक पयाणा।
एम विचारी आतमा, परिहरिय विकाणा।
डोरी हाथ अलेख नै, सोई सग वधाणा।
पूरणहारा पूरवै, दिन पाणी दाणा।
कायम आदम राखिया, क्या काम कमाणा।
इस उजूद मौजूद का, वैरी जमराणा।
मात पिता सुत भ्रात ही, कोई नँहि अप्पाणा।
दुनिया सहु को पच दिन, आयँ महिमाणा।
खलक तमासा आविया, मिळि एह पयाणा।
सब आये व्यापार कू, मुळ क्रम त्रियाणा।
हटवाडा ससार-दा, बाजार मडाणा।
एकै लाहा चौगुणा, एकै मूळ ठगाणा।
मूळ खजाना मेल्हिया, खाना मुळताणा।
कामण मूघा कप्पडा, वजर बेकाणा।
देख तमासा दरपिया, केई साध सयाणा।
मूरा-पूरा साधया, दिल ताव रखाणा।
जो दीन्हा सो ऊबर्‌या, बादू औखाणा।
जिस हूंदै दस सीस थे, गया रावण राणा।
एको साइं अप्पणा, और सब्ब विडाणा ॥१६॥

('नीसाणी विवेक वार' सूं)

# वहलोलखां-वध

गोरधन बोगसो

(गीत)

गयद मान रै मुहर ऊभो हुतो दुरद गत,
सिलहपोसां तणा जूथ साथैं।
तद वही रूक अणचूक पातल तणी,
मुगल वहलोलखां तणैं माथै ॥१॥

तणैं भ्रम ऊद असवार चेतक तणैं,
घणैं मगरूर वहरार घट की।
आच रै जोर मिरजा तणैं आछटी,
भाचरै धाचरै वीज भटकी ॥२॥

सूरतन रीझता भीजता सैलगुर,
पहा अन दीजता कदम पाछै।
दात चढता जवन सीस पछटी दुजड,
सात सावण ज्यु ही गई छाछै ॥३॥

वीर अवसाण केवाण उजवक वहे,
राण हथवाह दुय राह रटियो।
कट झलम सीस बगतर वरग अंग कटे,
कटे पाखर सुरग तुरग कटियो ॥४॥

(संकलित)

# प्रतापसिंह

—मालो सादू

## (गीत)

मह लागो पाप अभनमा मोकळ,
पिंड अदतार भेंटता पाप।
आज हुआ निकळक अहाडा,
पेखे मुख ताहरो प्रताप ॥१॥

चढता कळजुग जोर चडतो,
घणा असत आचतो घणो।
मिळता समै राण मेवाडा,
टळियो भाछल देह तणो ॥२॥

रुग भ्रतलोक मुणै सीसोदा,
पाप गया ऊजमै परा।
होता भेंट समै राव हीदू,
हुवा पवित्र सग्रामहरा ॥३॥

ईहे मूस वमळ ऊदावत,
जनम तणो गो पाप जुवो।
हेकण मार ऊजळा हीदू,
हर भू आण जुहार हुवो ॥४॥

## (२)

सामो आवियो गुर साथ सहेतो, ऊच वहा ऊदाणा ॥
अकबर साह सरम अणमिळिया, राम कहै मिळ राणा ॥१॥

प्रभगुर कहै पधारो पातल, प्राक्षा करण पवाडा।
हेवै सरम अमिळिया हीदू, मो सू मिळ मेवाडा ॥२॥

नागद्रहा जिण सू नहँ भिडियो, रावळ राजा राया।
तिण कज कोड लिया तेतीसा, थीरग मिळिया साया ॥३॥

एका कारज रहियो अळगो, अकबर सरस अनैंसो।
बिसन भणै रुद्र ब्रह्मा विचाळै, बीजा सागण बेसो ॥४॥

(संकलित)

# महावीर कल्लाजी रायमलौत

—दूदो आशियो

भलो मरण-मगळीक करि, चढियौ गढ समियाण।
अकबर साह वखाणियौ, राणा राणो-राण ॥
राण वाखाणियो त्यार राईत नै।
दीपियो प्रवाडै़ घणा थोडै़ दिनै ॥
भणै संसार राठोड़ सावत भलो।
करै मगळीक समियाण चढियौ कलो ॥१॥

यह समियाणो पाकडै़, रोहो करै दुसल्ल।
नव ज कल्याणो नीसरै, माल-तणो एकल्ल ॥
नव ज एकल्लमल कल्याणो नीसरै।
कविल वाराह गढ सबळ रोहो करै ॥
नामियो नहीं आहेडिए नीकडै।
पाणधर राण समियाण थह पाकडै ॥२॥

धींट घळै रजनो गळै, अरि करि धिखै अगार।
दूर सहै गढ गहमहै, तू वाछतो वार ॥
वार तू वाछतो तिका वाघाहरा।
ईखि भाराथ बळ पराक्रम आपरा ॥
खेति धावो हुवै नही तोसू चळै।
धींट घाळै करै चूक चहुवै मळै ॥३॥

केहरी पाधरि पोढियौ, पोहरा केन पहति।
हेवल लक्खा ही हणै, से लक्खिण जागति ॥
जागियो छरा ऊशाडि जोधपुरो।
पिसण घड सामहो सेस तो पाधरो ॥
वाधियो नेनि सिरि निहसि लांबाळवो।
निहग लागो भलो सीह नींदाळवो ॥४॥

सीहा सत्य जोडियै, हत्या तणा बखाण।
कलौ कटक्कै घेरियौ माण न छडै राण॥
माण छडै नही राण वेढीमणौ।
घणै बोलावियो जोर दाखै घणौ॥
हूणै मोताहळा कुत बे हत्थिया।
सीह पडिगाहियौ नीरूड सत्थिया॥५॥

कलौ अकेलो थरि घणा, आगै एकलमल्ल।
ऊभौ आपमिजै नही, सुरिताणा उरि सल्ल॥
साल सुरिताण तुडिताण रायमल सुतण।
मल्हपियौ क्रमै असमेध करतौ मरण॥
खळा मुहि राखिया साखियो अणखलौ।
कळह आध्रिमामणो हुवौ एको कलौ॥६॥

करि जमहर हरि भगति करि, समहर ग्रहि खग साझि।
कलौ भलौ भ्रित कारणै, वरि दुलह तिय काजि॥
काजि दुलह तरणि तिकरि साम्है क्रमै।
गाज गढ बाजि रणतूर चहुवै भ्रमै॥
थरकि उर कायरा नरा आतर थियौ।
कलै जमहर जिगन पेखि मगळ कियौ॥७॥

राठवडा भड बकडौ, वयू पोढ्यौ कलियाण।
राण कवल कथ राखिवा, सिर अप्पै समियाण॥
समपि समियाण सिर सटै सलखाहरा।
ऊजळा पूरवज किया सव आपरा॥
एम रिण जोधहर राय खेली अचड।
रिण पिल्लग पोढियौ कलियाण राठवड॥८॥

वैकुठ थिया वधामणा, नीघसिया नीसाण।
सिर अप्पै समियाण नै, रत्थै वैठो राण॥
राण बैठो रथे रभ पूगी रळी।
अमर आणदिया गूडीयू ऊछळी॥
तूज पाधारियै तुग रायमल तणा।
वाजि नीसाण वैकुठ वाधामणा॥

(सकलित)

## रायसिंह कल्याणमलोत

रगरेलो (वीरदास वीठू)

(गीत)

पाताळ तठै थळि रहण न पाऊ,
रिध माडे खग करण रहै।
मो म्रतलोक रायसिंघ मारै,
कठै रहू हरि वळिह कहै ॥१॥

वीरोचद-सुत अहिपुर मारै,
रविसुत तणो अमरपुर राज।
निधि-दातार कलावत नरपुर,
अनत रीर गति केहि आज ॥२॥

रयण दियण पाताळ न राखै,
कनक-प्रवण रुघो नविलास।
महि-पुढि गजदातार ज मारै,
बिसन करै पुढि मांहू वास ॥३॥

नाग अमर नर भुवण निरखता,
हेक ठौड छै, कहै हरि।
धर अरि रायसिंघ घातिया,
सुरिंद तठै जाइ बास करि ॥४॥

धमालखा (जालौर) व्याजस्तुति

छूट्टण तेरा बाप, जिर्ण सीरोही कुट्टी।
छुट्टण तेरा बाप, जिर्ण लाहोरी लुट्टी॥
छुट्टण तेरा बाप, जिर्ण बायडगढ वोया।
छुट्टण तेरा बाप, जिर्ण धूमडा धवोया॥

कूटिया प्रसन खागा किता, मूंछें अर सांचे धरा।
मो कुट्टण न वह कमालखा, तू कुट्टण विणियागरा॥

## जैसलमेर रो जस (व्यंग्य)

राती रिढ थोहर मध्यम रूख।
भमै दुगपाळ मरता भख॥
हुवैरा तालर आवै हेर।
मैं दीठा जादव जयसलमेर॥
दीवायत राणी गड्डा टोळ।
हेवलि सावत नीर हिलोळ॥
मुल्लक मझार न बोलै मोर।
जरकूवा सेहा गोहा जोर॥
ढबूरो बारठ ढीली लाग।
टहक्कै दोना खोडी टाग॥
गळ्योही जाजम माह बगार।
जुडै जहा रावळ रो दरबार॥
कवीसर पारख ठोठ न कोय।
हसत्ती भैंस बराबर होय॥
परख्या ऊन बरोबर पाट।
धिनो धर धाट, धिनो धर धाट॥
पदम्मण पाणी जावत प्रात।
रळती आवत आधी रात॥
विलक्खा टाबर जोवै वाट।
धिनो धर धाट, धिनो धर धाट॥

(सकलित)

# बादळ री वीरता

—हेमरतन

एम सुणी राजा रंजीउ,
हरष संपूरित हुउ होउ।
कुसळे-खेमे पुहतउ माहि,
जाणिक सूरिज मुकीउ राहि ॥५७५॥

कुमळ तणा बाजा बाजिया,
तब ते सुभट सहू गाजिया।
नीकळिया नवहत्था जोध,
घड दूसासण वहइ विरोध ॥५७६॥

सामि-धामि समरथ अति सूर,
गोरउ रावत अतिहि करूर।
अरि-दळ देखी अति ऊमसइ,
सुभट सहू मन माहे हसइ ॥५७७॥

सूरिम मगळड तनि ऊछळी,
सोहइ सुभट तणी मडळी।
साबा पहिर्‌या सुभट सनाह,
रूक हत्था दीसइ रिम दाह ॥५७८॥

च्यारि सहस नीसरिया सूर,
एक-एक थी अधिक करूर।
आगळि गोरउ बादिळ बेउ,
पूठइं चाल्या सुभट सवेउ ॥५७९॥

घाघरटइ दीसइ भट घणा,
पार न लाभइ पुरसा तणा।
तूट्या धाया ले तरवारि,
हलकारे लागा हलकार ॥५८०॥

"रे रे आलिम, ऊभउ रहे,
हिव नासी मत जाइ वहे।
पदमिणि आणी छइ अम्हि जिका,
तोनइ हिवइ दिखाडा तिका ॥५८१॥

तोनइ खाति अछइ अति घणी,
अम्ह ऊभा ते देवा तणी।
हठीउ छइ तउ करि हथियार,
हिव आलिम मनि हुइ हुसियार" ॥५८२॥

एम कही नइ आव्या जिमइ,
दीठा आलम अरियण तिसइ।
रणरसीउ ऊठिउ रिम राह,
विणठी वात करइ पतिसाह ॥५८३॥

"रे रे कूड कीउ बादिलइ,
आवउ सुभट सहू हिव किलइ।"
हलकार्या असपति निज जोध,
धाया किलली करता क्रोध ॥५८४॥

माहोमाहि मडाणउ किलउ,
बडवी बोलइ इम वादिलउ।
"पातिसाह, मति छडइ पाउ,
जउ तु अधिरु अछइ रणराउ ॥५८५॥

तु आयउ ढोली-थी घसी,
हिव मत जाई पाछउ खिसी।
सूर अछइ तउ करि संग्राम,
नहिं तरि रहसी नहिं तुझ माम" ॥५८६॥

आलिम ना घडिया असवार,
जिम-दळ सरिखा जोध झुझार।
भिडइ भली परि भारथ भीम,
सुभट न चापइ पाछी सीम ॥५८७॥

धसबस धूळि विधूसइ धरा,
माहोमांहि भिडइ आवरा।
खेहा डबर ऊडिउ खरउ,
सूझइ सूर नही पाधरउ ॥५८८॥

बाण विछूटई बिहु दिसि घणा,
बाजइ लोह घणा साधिणा।
खडग विछूटइ करता खोज,
जाणि कि बादळि झबकइ बीज ॥५८९॥

सन्नाहे तूटइ तरवारि,
तिणगा ऊडइ अधिक अपार।
अगनि-झाळ झळकइ असि धार,
घण जिमि हूउ घोर अधार ॥५९०॥

खळक्या खळहळ लोही खाळ,
पावस जेमि वहइ परनाळ।
रज रुधाणी थयउ प्रगास,
गिरझणी मस तणा ले ग्रास ॥५९१॥

पूरइ पत्र रुहिर जोगिणी,
मुण्डमाळ ले ईसर धणी।
झडवड झडप भरइ सीचाण,
अंबर जोवइ अमर विमाण ॥५९२॥

सूरिज निज रथ खंची रहइ,
रगति-विगति नवि काई लहइ।
इणि अवसरि गोरउ गजगाहि,
धाई आविउ जिहा पतिसाह ॥५९३॥

मेल्हाउ खडग महाबलि जिसइ,
असपति अळगउ नाठउ तिसइ।
बोलइ बादिल बे कर जोडि,
"नासता मार्‌या छइ खोडि" ॥५९४॥

रतनसेन राजा अति भळउ,
गढ ऊपर-थी देखइ किलउ।
जोवइ बादिल गोरा तणा,
हाथ महाबळ अरि-गजणा ॥५९५॥

पदमिणि ऊभी द्यइ आसीस,
"जीवे बादिल कोडि बरीस।
धन्य-धन्य बळिहारी तूझ,
तइ मुझ राखिउ सगलु गूझ" ॥५९६॥

('पदमिनी चउपई' सू)

# वीसूजी (दुर्गा) री स्तुति

—हेम कवि

निळटइ दीपै नूर, तेज तपै तनि तो तणं ।
सहस कै ऊगा सूर, वदनि तिहारै, वीसहथि ॥१॥

टळवळता धइ टेक, भावठ भाजै भगवती ।
ऊधी आस अनेक, वहिली पूरै वीसहथि ॥२॥

ठोड नही तो ठाम, जिहा नही तू जाळपा ।
नवा-नवा करि नाम, वसै सदा तू, वीसहथि ॥३॥

डमरू डाक डमाल, घणे घमते घूघरे ।
फिरि-फिरि भरती फाल, बाघ चढणि तू, वीसहथि ॥४॥

ढमकते ढोलेह, घणे दमामे घुमते ।
घरवते बोलेह, बेठी वक सू वीसहथि ॥५॥

नयणे निद्रा रूप, वाचा रूपा वयण तू ।
पिड-पिड पवन सरूप, वपि-वपि दीसई, वीसहथि ॥६॥

तरुण तुहारो तेज, ससि जिम सीतळ सेवका ।
हितुया दाखै हेज, विना वहता वीसहथि ॥७॥

थिर मोधा तै थान, महल महागिरि मदरे ।
गिणी न आवै ग्यान, वसति तुहारी वीसहथि ॥८॥

देवी तो दरबार, सुर ऊभा सेवा करै ।
देखण तो दीदार, वारू मागै, वीसहथि ॥९॥

धरै हियै तो ध्यान, एक-मनां जो ऊळगै ।
महिपति दे बहु मान, वचन फळे स्या, वीसहथि ॥१०॥

रसणि वसै रस रग, कवित कहावै कवियणा ।
आई तू उछरग, वाणी रूपे, वीसहथि ॥११॥

सामा मेटै लेख, भला करै तू भगवती ।
राखै भगता रेख, वांन वधारै, बीसहथि ॥१२॥

वदन सुधारस वाथि, नेह सरोवर नयण तो ।
बाहा ग्रहे बोलावि, वयण अमीरस, बीसहथि ॥१३॥

सरण हियै तो सेव, माता हू मूकू नही ।
हित सू साभणि हेव, वासै करि दै, बीसहथि ॥१४॥

('बीसूजी री बावनी' सू)

## जयमल्ल

—ईसरदास रतनू

चित्रकूट ऊपरे, मिळे पतसाह तणा दळ ।
कासमीर कामरू, गौड बंगाल अचागळ ॥
खेखनाज खधार, धार आरब धोळागिर ।
हुज हुरेब हुरमज्ज, सजै एराक तणा सिर ॥
उत्तरापथ पूरब छिडे, खडे खड खुरसाण रा ।
मीर सो चडे मेवाड दिसि, खडे पयाणे पदरा ॥१॥

पातसाह छेलियो, पूर चतुरंग प्रगट्टै ।
चित्रकूट चड कोट, थट्ट अवियट्ट निहट्टै ॥
धरा धूज धमधमे, द्रमे पायाळ द्रमक्कै ।
गोम बोम धूधळे, मेर गिर मेर सळक्कै ॥
कायरा नरा उर फद्दरे, भार कध कूरम भमे ।
मूगले कियो मिळि मारके, गिरद पेच चोही गमे ॥२॥

मूभा रण झाटके, ताम जैमल्ल प्रमाणे ।
हूदो सारी दूठ, दळे देसे दीवाणे ॥
मैं धीरे मीर जो, देस अहिपुर दोदट्टै ।
मैं पट हय पाडिया, धार फौजा धोसट्टै ॥
आंजसहि कमध मो ऊजळा, सार पाण सूरे सजे ।
मो भुजे लाज मेवाड री, चित्रकूट म्हारे भुजे ॥३॥

ज तु मांगी जैमाल, धरा द्रब लाख खजीणा ।
ताज कुलह जर कमळ, लाख तेजी साखीणा ॥
अहेपूर मेडतो, वडे वधनौर विगत्तो ।
सौ सांभरि चाटसू, गगह सिंधुरा महत्तो ॥
उबरा साह आलम कहै, ताइ न मेटौं वाच मैं ।
म म हालि अप्प ज्रिन भाडि मा, मानि साच गड देट मैं ॥४॥

ज्यों कान्हडि,जाळोर, दीध जदि साको रवदै ।
दूदे जैसलमेर, दीध करे होण न दवदै ।।
ज्यो हमीर रणथंभि, जुडे जीतो जगि आणं ।
सोप मडोवरि जेम, कियो सानजि समियाणे ।।
तिम वरिस सरिस पतसाह तो, खाग सार मेरो ठरों ।
नहं मनो सील न दियों दुरग, वदे माल वीरम्म रो ।।५।।

घोदाळम खीजियो, धरे कर मूठ करारी ।
असख खान ऊमरा, हुए आइस हलकारी ।।
कुहक वांण केवाण, धार आराण धमधक ।
घोह छोह दमदमां, ताम आफाल मंडे तक ।।
साबासि मुरगा सीधडा, जोवै रिख नारद जिसो ।
हिन्दुआ अने तुरका हुवे, आवरत्त मा ै यसो ।।६।।

ईसर नै जयमाल, पनै मलहै प्रोचाळे ।
करमचद रूपसी, ढाल ढाहण ढेचाळे ।।
भावीजे भाइयि, सूर धीरे सन्मनाहे ।
रजपूते राउते, रूक हत्थे रिम राहे ।।
हाकळे आप घोसे हुओ, गुडै रौद्र हो एग रे ।
मारके भुरज मालाहरे, जडण जोध जैमाल रे ।।७।।

आभ लग्ग रिण बग्ग, किये कर खग्ग करारै ।
दियै धार पाहार, सार सेलार सघारै ॥
भरे बरथ समत्थ, करै खलखट्ट निहट्टो ।
रुक झट्ट खवट्ट, हुवै थट्टा आवट्टो ॥
उछळै जीव जळ तोछतै, तडफड धड भड माछ तिम ।
जैमाल करै चित्तौड सिरि, रामायण हणमत जिम ॥१०॥

घाट वराड अनाड, सारि अरिडि पच्छाडै ।
करड दत बळवत अत जोतै अक्खाडै ॥
लोचन्नै आरत्त, दत निय भत झिखते ।
हूसै धसै ऊससै, सार पाहार वणते ॥
रिम राह धीर वीरम्म रौ, हणै घणा भड हायळै ।
जैमाल मरै अमकह करै, खळा लाख सीके खळै ॥११॥

हो देवा दाणवा, नाग मडळ नागिंद्रा ।
राऊता राउळा, राउ राणा राजिंद्रा ॥
सूर चद साखिया, तवौ कवी नारद सारा ।
पीरा पैकबरा, जख्ख सेखा जड धारा ॥
खुरसाण घणी सो रण खळै, सुणौ कवि मानौ सही ।
हणि घट्ट कीध दूदाहरा, किमहि एम कीधो कही ॥१२॥

(सकलित)

## गीत

आया दळ सबळ सामहो आवै,
रंगियो खग खतवाद रतो।
ओ नरनाह नमो नहँ आवै,
पतसाहण दरगाह पतो ॥१॥

दाटक अनड दड नहँ दीधो,
दोयण घड सिर दाव दियो।
मेळ न कियो जाय बिच महला,
केळपुरै खग मळ कियो ॥२॥

असपत इन्द्र अवनि आहडिया,
धाग झडिया सहै धका।
घण पडिया सालडिया घडिया,
ना धीहडिया पढी नका ॥३॥

आखी धणी रहै ऊदावत
साखी आलम कलम सुणो।
राणो अकबर वार राखियो,
पातल हिंदू धरम पणो ॥४॥

(संकलित)

# प्रभात

—पृथ्वीराज राठौड़

गत-प्रभा थियउ ससि रयणि गळंती,
वर मदा सइ-वदन वरि।
दीपक परजळतउ-इ न दीपइ,
नाम फरिम सूरतन नरि ॥१७९॥

मेली तदि साथ्र सु रमण कोक मनि,
रमण कोक मनि साथ्र रही।
फूले छडी वास प्रफूले,
ग्रहणे सीतळताइ ग्रही ॥१८०॥

धुनि उठी अनाहत सख-भेरि-धुनि,
अरुणोदय थिय जोग-अभ्यास।
माया पटळ निसा-मय भजे,
प्राणायामे जोति-प्रकास ॥१८१॥

सजोगिणि-चीर, रई, कैरव-स्री,
घर हट-ताळ, भमर गउ-घोख।
दिणयरि ऊगि एतळा दीधउ,
मोखिया बंध, बंधिया मोख ॥१८२॥

वाणिजू-वधू, गउ-वाछ, असइ-विट,
चोर, चवच, विप्र-तीरथवेळ।
सूरि प्रगटि एतळा समपियउ,
मिळिया विरह, विरहिया मेळ ॥१८३॥

('क्रिसन-रुकमणी री वेलि' सूं)

# सीताहरण

—माधोदास दधवाडियो

दह दिसि लखमण देखि, एह सगर भाखै असुभ।
सीता राम सपेखि, असुरे हरी काइ आचरी ॥१॥

भै आतुर सभाइ, नेडै जाइ जोयो निकुंज।
अजे न साम्ही आइ, हाइ लखमण लखमी हरी ॥२॥

लखमण सूना झूपडा, सीता-चोर पइट्ठ।
वळि धण दीसै नाह विण, धण विण नाह म दिट्ठ ॥३॥

तरि-तरि पेखि म कळिपतरि, सरि सरि हस म सोझि।
कुसळि न लखमण जानकी, नडि-नडि विहडि म खोजि ॥४॥

भणि-भणि सीत सुभाम, वनि-वनि खिणि-खिणि विचरता।
व्यापौ राम विराम, जळि तोछै वळि माछ जिम ॥५॥

तरु बोलै पिक ताइ, बारि लखण राघव वदै।
आ कोकिला उडाइ, सीता सरि सालै सबद ॥६॥

जीव पराक्रत जेम, किसौ सोग राघव करौ।
अखिल भुवनपति एम, काइ कळपौ लखमण कहै ॥७॥

बळि तो राम दुबाह, जो ये कळिचालौ जिती।
सु ज त्रिभुवन सीताह, काढौं खणि लखमण कहै ॥८॥

एह दहकध सु अध, महा जोध मारीच अघ।
बळ दाखवि वळिबध, दाणव छेतरिया दइव ॥९॥

ताम कसे कटि तूण, धारै भुजि वामै धनख।
दुवै पराक्रम दूण, साचरिया बाहर सती ॥१०॥

सुंदरि सोझनाह, वाहरुवा रघुवंसिया।
वनि लाधा वहताह, भागा छल रथ धज भिडज ॥११॥

चाचा चूर थियाह, पडिया दळ तडळ पगा।
पाखा पीजरियाह, अत वेढ़ा आया अनंत ॥१२॥

रळतो वाखर रग, गोदि लियो राघव गिरध।
जीतो तू रण जग, आखि समो दसरथ-अनुज ॥१३॥

मुख जिन देख्यो मोर, सासरथके गयो लक्सुर।
जोवणवत सजोर, ग्रिध मो वधि सें गयो वधू ॥१४॥

रीझे ग्रिध रघराइ, सुरां निधि दसरथ-सखा।
जण वइकुंठ जटाइ, पुहचायो वैंकुंठपति ॥१५॥

('राम रासौ' सू)

## वाल-गोपाल

—सांयो झूलो

भर्‌या माग सिंदूर मारग भाळै ।
वहै सामलो व्रज्ज सेरी विचाळै ।।
वहै सार सव्वार पिंडार वाळै ।
नवा नेह स तेह गोपी निहाळै ।।४।।

हरी हो, हरी हो, हरी धेन हाकै ।
झल्ख्या चढी नंदकुम्मार झाकै ।।
अहीराणिया अव्वला झूल आवै ।
भगव्वान नै धेन गांप्या भळावै ।।५।।

इकी वेवटी चोवटै आय ऊभी ।
सभाळी लियो स्याम मोरी सुरभ्भी ।।
हुई नंद री धेन स धेन हेळा ।
मिळै वाहला जाणि श्रीराम भेळा ।।६।।

पुळी नैर नीसार आवी प्रहट्टै ।
त्रिवेणी उलट्टीय समद्र तट्टै ।।
महक्कत सौंधा तणी सौढ माथै ।
हरी मजरी तिल्लक वेण हाथै ।।७।।

वई वासळी सिग्गळी नाद वाता ।
गळै माळ गुंजा व्रज वाळ गाता ।।
सवै आमला-सामला प्रत्यसद्दा ।
जमूना तणै तीर आहीर जद्दा ।।८।।

रमेवा सवै ग्वाल सू हेक रागै ।
कहै कीजियै कान्ह भीरू विभागै ॥
वईकुठ रो नाथ स्ठी विचारी ।
किया सारखा लोक बेहू किनारी ॥६॥

पर्ख-पार विहार भा दोहू पासै ।
लिया लक्कड़ी कध ऊभा हुलासै ।
धड़ू गेडियै गेंद मैदान घेरी ।
घणो घूमरे डवरै घेर घेरी ॥१०॥

झिलै आवता ऊलटै हेक झेरै ।
फिरी राम चोटा बही दोट फेरै ।
भड़ी आकरो माझियो खेल मातो ।
रमै सग गोवालिया रग-रातो ॥११॥

मिळै चोट सामो मभी दोट माथै ।
हुई दुहू मल्ला तणी हेल हाथै ॥
चढावै घणू साकडे तीर चाडै ।
जमूना तणै नाखियो नीर जाडै ॥१२॥

दडी लार कान्हो चढ्यो कच्छ डाळी ।
भरी झप काळीद्रहे नाग-वाळी ॥
काळीनाग रा कान्ह सभाळ केवा ।
लधी आण तूट्यो दधी मच्छ लेवा ॥१३॥

मड्यौ दूसरो खेल खेलत माथे ।
हिवँ ऊतरी वात गोवाळ हाथै ॥
मरै श्रीण खडो नमतय कान्हा ।
जोवै छेन धहीअ काठै जमन्ना ॥१४॥

('नागदमण' सू)

# सबद-वाणी

—काजी महमद

यें दुनिया कोई थिर नही, चित चेत हिया रे ।
नही थिर अम्बर मेदनी, ससि सूरज तारे ॥१॥

छत्र मघासन पोढ़त, समर तेसे साजे ।
है गै पार न पावही, प्रथवीपति राजे ॥२॥

जिनकौ सब कोई मानते, सिर छत्र धरावे ।
वैं भी खाली हाथ ले, मैं देखे जाते ॥३॥

जिनकैं मदिर-माळिया, कोडीधज हूते ।
गलम बिछाय पोढ़ते, जगळि आइ सूते ॥४॥

वै तन गळि माटी हुवा, कोई कहै न सारा ।
उस माटी का हे सखी, घट घडै कुम्हारा ॥५॥

जा घर माहै बैसत, हसि करते बाता ।
मन की रळिया मानते, जोबन भर जाता ॥६॥

वैं धर पर पैंधर हुवा, कोई कहै न ठाटा ।
ऊठे माजन हे सखी, चलि अपनी वाटा ॥७॥

जा बन सारस कुरळते, जहा सीतल छाहा ।
जा सर कवळ विगासते, निरमळ जळ माहा ॥८॥

जा सर हस पुकारते, निरमळ जळ जेहा ।
सो सर सूके थळ चढे, उहा उडीहे खेहा ॥९॥

जा बन मृधा कुरटते, वेली रस खाहा ।
जा बन चदन महकसे, भार अठारैं माहा ॥१०॥

जा बन कोइल कूकते, दसहू दिस ठाहा ।
वे बन सूकैं प्रळे गय, वैं कोकल काहा ॥११॥

काजी महमुद फनाफनी, चित चेतो भाया।
आज है सो कालिह नही, जग फिरती छाया ॥१२॥

इस दुनिया बाजार मे, सब सौदे आया।
किनहों ने तो विणजिया, किन मूळ नसाया ॥१३॥

(२)

इन आगणड़ै हे सखी, कई खेलण आयें।
इक खेल्या, इक खेलिहो, इक खेलि सिधायें ॥टेक॥

सासू दिया सिर घड़ा, आपण दुख रोई।
पथ निहारौं पीव का, मेरैं संग न कोई ॥१॥

एक अधारी कोहड़ी, दूजी नेजु छोटी।
नैन हमारे यो झरैं, जैसे गागर फूटी ॥२॥

आवो मिलो सहेलियो, मीड मेरा चोळा।
मैं गदी औगण भरी, मेरा साहिब भोळा ॥३॥

दुख आमो मोंचियो, दिन रैनि सवाई।
माळी छटिया ले गयो, हम खबरि न पाई ॥४॥

मान उनारे वह तळे, सगी बोळाये।
तुम जावो सगी घर आपरै, हम होइ चुवे पराये ॥५॥

काजी महमुद यू कहै, जुग नाही रहणा।
बाह पकडि पीव ले चल्यो, क्या उत्तर दीणा ॥६॥

(३)

मैणट म्हारी पाहुणड़ो परदेसी है।
यान्नि थान्हि चरेसी है ॥टेक॥

कछू घतन न किना कीना है।
कछू मवटि माथि न लीता है।
तार्न उटि चल्या है गीना है ॥१॥

वैं तो जगटि जाइ वसेसि है।
वैं दुख कुण सू कहेसि है।
उब जिह्नि सूनि मरेसि है ॥२॥

## सबद-वाणी

—काजी महमद

ये दुनिया कोई थिर नही, चित चेत हिया रे।
नही थिर अम्बर मेदनी, ससि सूरज तारे ॥१॥

छत्र सघासन पोढते, समर तेसे साजे।
है गै पार न पावही, प्रथवीपति राजे ॥२॥

जिनको सब कोई मानते, सिर छत्र धराते।
वै भी खाली हाथ ले, मैं देखे जाते ॥३॥

जिनकै मदिर-मालिया, कोडीधज हूते।
गलम बिछाय पोढते, जगलि जाइ सूते ॥४॥

वै तन गलि माटी हुवा, कोई कहै न सारा।
उस माटी का हे सखी, घट घडै कुम्हारा ॥५॥

जा घर माहै बैसते, हसि करते बाता।
मन की रळिया मानते, जोबन भर आता ॥६॥

वै घर पर पैअर हुवा, कोई कहै न ठाटा।
ऊठे साजन हे सखी, चलि अपनी बाटा ॥७॥

जा बन साम्म कुरळते, जहा सीतल छाहा।
जा सर कवळ बिगासते, निरमळ जळ माहा ॥८॥

जा सर हस पुकारते, निरमळ जळ जेहा।
सो सर सूके, थळ चढे, उहां उडीहै खेहा ॥९॥

जा वन मृघा कुरळते, वेली रस खाहा।
जा वन चदन महकते भार अठारै माहा ॥१०॥

जा वन कोइल कूकते, दसहू दिस ठाहा।
वै वन सूके प्रळै गये, वै कोकल काहा ॥११॥

काजी महमुद फनाफनी, चित चेतो भाया।
आज है सो काल्हि नही, जग फिरती छाया ॥१२॥

इस दुनिया बाजार मे, सब सौदे आया।
किनही ने तो विणजिया, किन मूळ नसाया ॥१३॥

(२)

इन आंगणडै हे सखी, कई खेलण आये।
इक खेल्या, इक खेलिही, इक खेलि सिधाये ॥टेक॥

सासू दिया सिर घड़ा, आपण दुख रोई।
पथ निहारौं पीव का, मेरै सग न कोई ॥१॥

एक अंधारी कोहडी, दूजी नेजु छोटी।
नैन हमारै यो झरै, जैसे गागर फूटी ॥२॥

आवो मिलो सहेलियो, सीउ मेरा चोळा।
मैं गदी औगण भरी, मेरा साहिब भोळा ॥३॥

दुख आमो सीचियो, दिन रैनि सवाई।
माळी कळिया ले गयो, हम खबरि न पाई ॥४॥

आन उतारे वड तळे, सगी बोळाय।
तुम आवो सगो घर आपणै, हम होइ चुवे पराये ॥५॥

काजी महमुद यू कहै, जुग नाही रहणा।
बाह पकडि पीव ले चल्यो, क्या उत्तर दीणा ॥६॥

(३)

भैणळ म्हारी पाहुणडो परदेसी हे।
आजि काल्हि चलेसी हे ॥टेक॥

कछु चलत न चिंता कीता हे।
कछु सबळि साथि न लीता हे।
तानै ऊठि चल्या है रीता हे ॥१॥

वै तो जगळि जाइ बसेसि हे।
वै दुख कुण सू कहेसि हे।
तब बिरहनि झूरि मरेसि हे ॥२॥

मैं तो सारी प्रिथमी जोई है।
मुझ मीत न मिलिया कोई है।
हू विलखी होइ-होइ रोई है ॥३॥

काजी महमुद दिल मे भाखै है।
कोई चित सईया पर राखै है।
मेरो जीव वसै उन पाखै है ॥४॥

(संकलित)

# सीता-रावण संवाद

—समयसुन्दर (महोपाध्याय)

हिव सीता रोती थकी, रावण राखइ एम।
मारग मइ जोतो थको, मधुर वचन धरि प्रेम ॥१॥
कामी रावण इम कहइ, सुणि सुंदरि सुजगीस।
बीजा नामइ एक सिर, हु नामु दस सीस ॥२॥
मुकि सोग तु सर्वथा, आणि तु मन उल्हास।
साम्हो जोइमि राम सू, हु तुझ किंकर दास ॥३॥
का बोलइ नहि कामिनी, द्यइ मुझको आदेस।
साम्हो जोइ सभागिणी, मुझ मनि अति अदेस ॥४॥
जउ तु हसि बोलइ नही, तो पणि करि एक काम।
दे निज चरण प्रहार तू, मुझ तन आवई ठाम ॥५॥
सीता सुदरि देखि तू, पृथिवी समुद्रा सीम।
तेहनो हु अधिराजियो, भाजु दुरजण भीम ॥६॥
राजरिद्धि अति रूयडी, तू भोगवि भरपूर।
इंद्र इंद्राणीनी परइ, पणि मुझ बछित पूरि ॥७॥
इम वेखाम घणा किया, रावण कामी राय।
सीता उपराठी रही, कहइ कोपातुर थाय ॥८॥
हा हताम, हा पापमति, हा निरलज, निरभाग।
पर-रमणी बाछइ जिको, त तो काळो काग ॥९॥
आज पछी मुझ एहवी, मत कहइ वात सपाप।
का मइलो करइ वस नइ, का लाजविइ मा-बाप ॥१०॥
नरग पडइ का बापडा, काइ लगाडइ खोडि।
रावण हुयो कुसीलियो, कहिस्यइ कवियण कोडि ॥११॥
का तू परणी आपणी, छोडि कुळीनो नारि।
परणी बाछइ पारकी, मूरख हियइ विचारि ॥१२॥

('सीताराम चौपाई' सू)

## राणा प्रतापसिंह

—जाडो मेहड़

(गीत)

हठमल्ल माळी हीदूवाणै,
ताईया सौ मूछ ताणै,
जगत सोह जग जेठ जाणै,
इमो राणौ आप।
हेक ताई कुळवाट हालै,
भिडण बाधै नेत भालै,
साह अकबर हीयै सालै,
तूझ तेग प्रताप ॥१॥

राइहरा अनि रूप राखै,
दुजड मेछा मार दाखै,
पुळे जाए खता पाखै,
पैखि माण प्रमाण।
भिडै रिणि गज-थाट भानै,
विदण घाडै सिंघ बानै,
मीर साची जोर मानै,
खाग तो खूमाण ॥२॥

खत्र ध्रणी खत्रवाट खेलै,
थाट जोगणिपुरा ठेलै,
झूम भुज्जा प्राणि झेलै,
विढै जूह विडार।
राण रिणि जयथम रोपै,
कुंभ करित्र हूणै कोपै,
लीह नह पतसाह लोपै,
गोध समव सार ॥३॥

('जाडा मेहडू ग्रंथावली' सू)

# कुवर रामसिंघ (आमेर)

—नरहरिदास

### गीत

सरप दाह जनमेजय पतिसाह ब्रालण सिवौ,
प्रथीपत विन्हे हठि पड़ै अणपार।
सरणि साधार खत्रभार धरिया सगह,
आसतीक जेमि थियै राम आधार ॥१॥

परीछत साहिजिहाण सुत कोपियौ,
तछक होमण गहण साह सुत ताणि।
तपोधनि अही हिंदवाणा चावण प्रभसि,
जरू रखपाळ जैसिंघ सुत जाणि ॥२॥

करण अहिमेद महवन हरी कोपियौ,
टळै न चळै जहागीर-हर टेक।
बाहा पै गारमक जिम हुवौ वहसि,
अभै पजर महासिंघ हर एक ॥३॥

अखिल रजरीत रा सिंध लागा अरसि,
भुवणि मेछाणा रा माण भागा।
निभै नरनाथ ग्रहि हाथ निरवाहियौ,
अहि सिवौ दोड़ण दिलेल आगा ॥४॥

उभै राहा सिरै वधै कूरम वागडा,
मनै जगदीस सबळा तणा माग।
खोद अरि अमाचौ थको आडौ खड़ै,
खोद सू राम ऊपाडियै खाग ॥५॥

(सकलित)

# सूरा-परा

—जगो खिड़ियो

सुरी त्यारि कीया कसे जीण तग।
वणावै सिरी पाखरा सार वग॥
सझे वस छत्तीस हिन्दू समत्थ।
करेवा महासूर भारत्थ कत्थ॥
ध्रुवा धारणा चित्त ऐसा सधीर।
वडाळा वहै त्रिह वीराधिवीर॥
पडै अगि मा उड़िड जेहा पतग।
भाफाळै अणी उप्परा धारि थग॥
जाते काळ नू चाळ मू झालि जुट्टै।
तरवार ज्या तेज रा ताप तुट्टै॥
मरेवा करै कोड भारत्थि मन्न।
त्रिणे भेल्हिया प्रज्जळै झालि तन्न॥
पडता दियै अम्भ थभा प्रचड।
खळा मारि खगे करै खड-खड॥
मरता न धारै महाजुद्ध माया।
करै काच सीसी जिसी टूक काया॥
सदाई लगै खाग नै त्याग सूरा।
पखै जे प्रिथीनाथ भूपाळ पूरा॥
पर-स्त्री न भेटै गऊ विप्र पाळै।
चलै गत्ति वेदो खित्री ध्रम्म चालै॥
इन्द्री पच जीपै महासूर एहा।
जगज्जेठ जोधा हणूमान जेहा॥
न भाखै अलो जीह नाकार नाणै।
जुडेवा खिती ध्रम्म आचार जाणै॥

समत्या इसा ऊडळा आभ साहै।
गजा दंत तोडै रिमा थाट गाहै॥
पचारै ग्रहे वाघ रैणा पछाडै।
भिडता गजा भीम जेहो भमाडै॥
न भागै जिके जुद्ध भागा न मारै।
सरोरा हुवा खह पिंडाण सारै॥

('वचनिका रतनसिंघ महेसदासौत री' सूं)

# दुर्गादास

—कुंभकरण सांदू

(गीत)

अवळधार खट झाट वहवाट करतौ प्रसण,
भिड़ता निसाट धर थाट भागौ।
दुरग दिली जायर दरकार जुध देखिया,
लार सकर वहै प्यार लागौ ॥१॥

भीमड़ा तणै तट विकट घट भाजतौ,
मोम भाराथ सिवनाथ भोळा।
जोयवा खड़ा सकर सकत्त जेहड़ा,
दोवड़ा तेवड़ा जूथ दोळा ॥२॥

पेखता फिरता फिरै हूरा परी,
खिलै नारद सकत्त वीर खेला।
अवलिया सिये पैकबरा अवरा,
महत है आसुरा सुरा मेळा ॥३॥

धीभरै तरै केई मीर बजरै विकर,
तणछ खग फरहरै वीर ताळी।
कहर धर रिणोही मीर हाका करै,
अजे ही भीमड़ा तीर वाळी ॥४॥

(संकलित)

## कूपो महिराजोत

—डूंगरसी रतनू

(वडा दूहा)

साहिब कजि सिणगारि, तेजी कीयो मुरातिब ।
आगळि छोडै आणियो, चाटो चरुआदारि ।।१।।

वाजि न चहू मळाउ, फिरै मळाटू फेरियो ।
मेहा आगळ मोरडै, कीधो जाणि कळाउ ।।२।।

असिमर फर वप ओपि, फडि कूंपै जमदढ वसी ।
कूत कमाण मळासिया, किलबा ऊपरि कोपि ।।३।।

माझी कूपो माहि, खाति हुओ खाडो खडै ।
लावै पथि नेडै लगनि, जान क जाणै जाहि ।।४।।

सीधू घमळ सुणाइ, पुड ग्रीघण पाखा किये ।
परणै तिणि परि जाइ, मेछा घड महिराजवत ।।५।।

अणी तजे आखेय, लोही कूकू लाइजे ।
तण बाधावै तेम, मौड बधो महिराजउत ।।६।।

वाखिम भरियो बीद, चौंरी आरेयणि चढै ।
अरि छंदै अण नीद, मछरैतो महिराजउत ।।७।।

घडा घडा तो घाइ खिसे नथी पैला खिसै ।
पाचो निणि परि आइ, मेर क जाणै माडियो ।।८।।

धू अरि पाई धारि, घड पोइण दळि पग धरै ।
हाम तणी गति हालियो, बीदो बीरत वारि ।।९।।

सौरभ ल्यै अरि सास, किलम घडा पैठो कमळि ।
भमरो जेंनो भणत्रियो, ऊदावत अस हास ।।१०।।

(सकलित)

# कवित्त (छप्पय)

—जिनहर्ष मुनि (जसराज)

छप्पय वाल्हउ होइ, फूल केतकी सुगधउ।
नारी वाल्हइ होइ, अवल आभरण निवधउ॥
राजा वाल्हउ होइ, तुरी चचल चालतउ।
किरपण वाल्हउ होइ, दाम हरखइ दीखतउ॥
कामी नरा वाल्ही तिया, वाल्ही सिज्या ऊघता।
जिनहरप कहै मज्जन सुणउ, तिम दाता वाल्हण मगता॥१॥

लच्छि तिका सुकयत्थ, जिका पर-कज्जइ आवइ।
नारि तिका सुकयत्थ, जिका भरतार सुहावइ॥
पुत्र तिको सुकयत्थ, जिको जीवता पाळइ।
मित्र तिको सुकयत्थ, जिको नवि छेह दिखाळइ॥
पडित तिको सुकयत्थ गिणि, पूछ्यारउ उत्तर दियइ।
जिनहरप सुगुरु सुकयत्थ सो, जिका सहु परि हित राखै हियइ॥२॥

जरा कियउ जाजरउ, पिंड परचड हुतो जो।
पग डग नस कै भरै, सीस धूजण लागउ सो॥
जीभ करइ लालरा, समझि न पडै बोलता।
पडइ लाळ मुख-थकी, दात पडिया देखता॥
आंखि री जोत माठी पडी, ऊठ-बइस थई परवसा।
जिनहरप बाल हासी करइ, जरा बिगोया माणसा॥३॥

ढहइ महल-माळिया, कोट गढ पणि ढहि जायइ।
ढहइ देव देहरा, अनड गिरि पाथर थायइ॥
ढहइ गहन वन वृक्ष, ढहइ कीधी जे माया।
देव तणी नर तणी, ढहइ सोई सुन्दर काया॥
जिनहरप सुथिर जस कोटडो, जउ लागइ दुसमण धका।
पिणि ढहइ नही जुग जावता, ऊडी जड घाती जिका॥४॥

('कवित्त बावनी' सू)

# कैलास

—किसनौ

जोयन बीस हजार जोवता, सहस दस पहिलउ कइलास।
असडउ रूप अनोपम आखियइ, एकण थम तणउ आवास ॥८१॥

वृखराव तिसा गिरराव विराजइ, अति साखा सवळवता अग।
सिसहर तणी पाखती सोहइ, ग्रह जाणे लागा गयणग ॥८२॥

तिण पग-पग चदण तणा तरोवर, विविध-विविध फूली वणराइ।
पखी मुखि हरि नाम पुणता, सुर ताय मानव तणै सुहाय ॥८३॥

छिलता पहाड-पहाड पाखती, अधर झरता चरण धरइ।
अब तणा वृख लुब आविया, कुजर विच सारसी करइ ॥८४॥

छिल्लता झिलता घणू छछोहा, ताढी तट छाया वृख ताड।
मद झरता इसरा मयगळ, पाएले चालस्यइ पहाड ॥८५॥

कसतूरी नाभिनि सधिनि केवल, उडियण आइ लागा आकास।
मृग तेथि थनत हुया वन माहे, वाजइ पवन तणा सुर वास ॥८६॥

वणराय अढारइ भार फळिय वन, कोइल मोर मल्हार करइ।
ईसर तणी आन्या इसडी, चावरियाळ चवाळ चरइ ॥८७॥

अवसर एक अनेक आहवइ, करणी मनवछित फळ काज।
वृख सायर पाखती विराजै, जाणे रथ थामिया जिहाज ॥८८॥

नदी वहइ झावुका नाखती, धोम उदक चौ लागी धार।
ईसर तणी आन्या इसडी, पइडउ दइत उतारइ पार ॥८९॥

## कुमार-विजय

तीस कोढि तिन्न कोड देव तन्न, सुर आघी आवीया सहि।
दास तणी परि नाम दिखावइ, मुनवर रुधा दइत महि ॥३६३॥

सिव कहियउ देवा सिगळा ही, दूजा काइ न दीसई देव।
देवा बिया कन्हा घण दानो, भोळी चत्रवति पूछइ भेव ॥३६४॥

सुर आखइ अरज करे ताइ सभळ, देव वडा पछाडइ दइत।
आवइ हुकम जउ हुयइ उयँ रउ, रहिया हुइ ऊयइ री रइत ॥३६५॥

सिव तिण वार पनाग साहियउ, बगाली दाखवइ बळ।
उण वेळा सिव रइ मुह आगळ, दूजा कुण नेठवइ दळ ॥३६६॥

तरइ विसन कहइ आगळी विसभर, ब्रह्म तणइ छइ उया वर।
तीने भुवण त्रिसीग ताडिया, घणी ज कीया सयल घर ॥३६७॥

ब्रह्म तरइ पूछिया विसभर, दाखवि मरइ किंयइ परि दइत।
देव तणउ वाहरू दाखइ, रहिया देव वडा हुइ रइत ॥३६८॥

सेनापति कुवर हुओ कातिग सुर, सुर हुविया अनेरा साथ।
तइ ब्रह्म कहइ आगळि विसभर, जाई असुर सही भाराथ ॥३६९॥

आहुचइ सकति पूछिया ईसर, मेल्हीस कुवर लियण ताइ माज।
एकण देव ऊपरइ इतरा, आखइ सती धनउ दिन आज ॥३७०॥

वहिलउ दीन्हउ हुकम विसभर, मेछ पछाडण आप गल।
बडइ राग नीसाण वाजियइ, दइत तणइ देसे दहल ॥३७१॥

प्रह पूठती समा जाइ पूगा, मेरिया असुर रूधिया घाट।
ऊतरिया उर घट्ट आवे नह, दीजइ दइत तणइ सिर दाट ॥३७२॥

तडकाइसुर दइत बाधियउ तरकस, देखे दळ हीसीयउ दूठ।
हलकारइ भड आप अपूठउ, पूठी रखउ थाप लइ पूठ ॥३७३॥

मिळिया अणी-अणी रसणे मिळ, सइघे मुहे धूमिया सार।
झालरिया नाखे भड झिलिया, धसकइ धरा वाजियइ धार ॥३७४॥

आवइ नव नवा भड अणीए, छोड कमाण नीछटइ बाण।
देव करारा हाथ दाखवइ, असुरा घड चूकईं अवसाण ॥३७५॥

बळ करतउ घणू बोळावतउ, लख भड आम त्रिसा केलार।
ठोसइ गयंद पहाड ठेलतइ, आया असुर करे अहकार ॥३७६॥

वाजिया आम्हो-साम्हो वागड, घाट जुडती त्रिविध घड।
खटकइ कडी छडकी खागे, घ्यागे लागा वहइ घड ॥३७७॥

ंइत पहाड जिसा दाखीजइ, भड घूणा करता भाराथ।
ावि कुवार सादूळ तणो गति, निज तो सरण अनाथा नाथ ॥३७८॥

ुवरागुर तरइ पुन्नाग ग्रह्यउ कर, भड हलकारइ महाभड।
ग्रवण धाण क्वाण आवजइ, ऊपाडे नांखिया उपड ॥३७९॥

मिटिया असुर मारिया माझी, गोरू हुइ मुख घास ग्रहइ।
हरी जिके छुरी विष वाढइ, रहइ तिके पग छाह रहइ ॥३८०॥

नीतइ तणा दिवाडे जांगे, हुई बधाई लगइ हरि।
ुर असुरां अगा छोडाविया, घणा महोछव घरा घरि ॥३८१॥

प्रवल सकल अवगति अपरपर, रामेसर मोटउ राजान।
केसनउ कहइ कृपा हिव कीजइ, वड दातार वधारण वान ॥३८२॥

('महादेव पारवती री वेल' सू)

## सरस्वती-वंदना

—धर्मवर्द्धन उपाध्याय

(गीत)

अगम आगम अरथ उतारै उर सती,
  वयण अमृत तिके रयण ज्यु वरसती।
हुअइ हाजर सदा हेतुआ हरसती,
  सेविजे देवि जे सरसती सरसती ॥१॥

विद्या दे सेवका विनौ वाधारती,
  अडवड्या साकडी वार आधारती।
इंद नरिंद जसु उतारै आरती,
  भणा तुझ नै नमो भारती भारती ॥२॥

वेलि विद्या तणी वधारण वारदा,
  हुआ प्रसन्न सहु पामिजे हारदा।
प्रसिद्ध सकल कला नीरनिधि पारदा,
  शुद्ध चित्त सेव नित सारदा सारदा ॥३॥

अधिक धर ध्यान नर अगर उखेवता,
  व्यास वाल्मीक काळीदास गुण वेवता।
सुबुद्धि श्री धर्मसी महाकवि सेवता,
  दीयइ सहु सिद्धि श्रुत देवता देवता ॥४॥

### मेह (गीत)

सवळ मेगळ बादळ तणा सज करि,
  गुहिर असमाण नीसाण गाजै।
जग जोरै करण काळ रिपु जीपवा,
  आज कटकी करी इंद राजै ॥१॥

तीख करवाळ विकराळ वीजळि तणी,
घोर माती घटा घरर घालै।
छोडि वासा घणी सोक छाटा तणी,
चटक माहे मिल्यो कटक चालै ॥२॥

तडातडि तोब करि गयण तडकै तडित,
महाझड झडि करि झूझ मड्यौ।
कड़ाकड़ि क्रोध करि काळ कटका कियौ,
खिण करै बळ खळ सबळ खड्यौ ॥३॥

सरस बांना सगल कीध सजळ थळ,
प्रगट पुहवी निपट प्रेम प्रथळा।
लहकती लाछि वळि लील लोबो लही,
सुध मन करै ध्रम थील सपळा ॥४॥

## शिवाजी (गीत)

सकति काइ साधना, मिना निज भुज सकति,
वडा गढ घूणिया वीर वाक।
अवर उमराव कुण आइ साम्हो अडै,
मिवा री धाक पातिसाह साकै ॥१॥

खसर करता तिके असुर सहु खुदिया,
जीविया तिके त्रिणो लेहि जीहैं।
सबद आवाज सिवराज री साभळै,
बिली जिम दिली रो धणी बीहैं ॥२॥

सहर देखे दिली मिले पतिसाह सू,
खलक देखत सिवौ नाम खारै।
आवियो वळे कुसळे दळे आपरै,
हाथ घसि रह्यौ हजरत्ति हारै ॥३॥

कहर म्लेच्छा शहर डहर कन्द काटिवा,
लहर दरियाउ निज धरम लोचै।
हिन्दुओ राउ आइ दिली लेसी हिवै,
सबळ मन मांहि सुलताण सोचै ॥४॥

परताप निवड भड दळ पतिसाही,
आवि रणगण आहुडिया ॥७१॥

धजवड ग्रहि धवड धवड ग्रहि धजवड,
सार सुभड झड मामहिया।
लडथड धड मडड मडड होइ लडथड,
दडड रुहिर जड वाजविया॥
घाइ घडे अघड घड घड अरि उरुड,
मरगड बीछड घड मुडिया।
परताप निवड भड दळ पतिसाही,
आवि रणगण आहुडिया ॥७२॥

(कवित्त)

पतिसाही दळ सरिस, राण पातल चढ्ढे रिण।
राजा राम नरेस, तुअर दस सुहड पडे तण॥
रहे मेडतियो राम, रहे मानो कणिआगर।
रहे भीम डोडियो, साथ दोई लिया सहोवर॥
रण रहे मेर दूलाहरी, सुकवि राम खग सगतसी।
असुरेस फोज जीतो अभग, पाघर राण प्रतापसी॥७३॥

('सगत रासौ' सू)

## गजमोख

—अजीतसिंह (महाराजा)

ऊंडै जळ में ले चल्यौ, गज कू विकटौ ग्राह।
तब ततकार सभारियौ, राधा नागर नाह ॥१६१॥

जिण साइं पैदा कियौ, सो मो पास सदाय।
अलख अप्रपर ईसवर, सो क्यू अळगौ थाय ॥१६२॥

जळ आयौ गज पीठ पर, डर उपज्यौ मन माहि।
ग्राह राह वैरी भयौ, जळ ऊंडै ले जाहि ॥१६३॥

तातू जळ खाणीजता, की गजराज पुकार।
राज बिना श्रीरामजी, है कुण राखणहार ॥१६४॥

माथा ऊपर जळ फिर्यौ, नैणा सूझत नाहि।
बाहर आवौ व्रजपती, ग्राह ग्रहे ल जाहि ॥१६५॥

सादे आवौ सावळा, भगता करवा भीर।
कह मोकू राखे कवण, राज बिना रघुवीर ॥१६६॥

हुत्यौ मन हेला दिया, धणी ज विखमी आय।
ग्राह तणा मुख माहि सू, लीजै प्रभु छुडाय ॥१६७॥

भीर पडी जद भगत कू, साहि करी व्रजराज।
लाज हमारी राखियौ, यू टेरत गजराज ॥१६८॥

रावण के दह छेद सिर, बांधे सायर पाज।
रीझ वभीखण कू दियौ, लंकागढ को राज ॥१६९॥

कंस पछाड्यौ कृस्न जू, कारण संता काज।
मेट्यौ संकट मात पितु, उग्रसेन दे राज ॥१७०॥

राख लियौ प्रहलाद कू, हिरणाकुस कू मार।
थंभ फाड परगट भयौ, धन नरहर अवतार ॥१७१॥

ध्रू कू दीयौ अटळ पद, साची करौ सहाय।
ग्राह तणा फंद माहिं सू, लीजै मुझ छुडाय ॥१७२॥
हाथी बहु हेला दिये, कर बाहर करतार।
वेगा आवौ वरदपत, मेरी भीर मुरार ॥१७३॥
भगतबछल ब्रद ताहरौ, सबको सिरजणहार।
सकट मेटौ सामजी, स्रवणा सुणौ पुकार ॥१७४॥
सुणौ अणसुणी नह करौ, अब अंत होत अबेर।
वेग समाळौ व्रजपती, हित कर इण कू हेर ॥१७५॥
मैं दुरबळ बळहीन मैं, निरधन निपट अकाज।
ग्राह लियै मो जात है, साहि करौ महाराज ॥१७६॥
× × ×
महामाय हर सू कहै, ढील न कीजै साम।
सत उबारौ आपणौ, और तजौ सब काम ॥२२९॥
चीर वधायौ द्रौपदी, राख लियौ प्रहलाद।
तैसे गज रख्या करण, प्रभु चढे सुण साद ॥२३०॥
पखराज पख पाण कर, आतुर ऊठे धाय।
सीस हुकम है स्याम को, वेग पहूचू आय ॥२३३॥
गुरड घणू आतुर-थकौ, मन सत गुणौ वहत।
तो ही धीरज ना धरै, आतुर कमलाकंत ॥२३४॥
गज कू डूबत जाण के, खगपति तज हर धाय।
तातू तोड्यौ ग्राह को, आगे चक्र चलाय ॥२३५॥
सब जळ पैठौ सहज बळ, बळ बळ लगै न कोय।
सूंड रही बाहर तबै, जळ तै आगुळ दोय ॥२३६॥
हाथी चौ ग्रह हाथ, जळ तैं बाहर काढियौ।
भले भले रघुनाथ, कुण तो विन ऐसी करै ॥२३७॥
ऐसी तो बिन कुण करै, राज बिना रघवीर।
दुरबळ दीन अनाथ की, भली करी तुम भीर ॥२३८॥
हरि कुंजर वदन करै, नमण करै कर भाय।
महाप्रभू कुण राज विण, मेरी करै सहाय ॥२३९॥
मैं अब हुवौ सनाथ, पाप कटे भव-भव तणा।
मोरे सिर पर हाथ, राज दियौ रघुवीरजो ॥२४०॥

(गजमोख स

# राजकुमार रो जन्मोत्सव

—वीरभाण रतनू

सुर जग्गे सुभ समय, भूम अन जुमे भुभावा ।
रैंण सभाळे राव, मिटे अटकाव वधावा ॥
नव उच्छव नर नार, नवल श्रृंगार वसन्ने ।
गीता मे म्रग मास, कह्यौ मम रूप किसन्ने ॥
अवतार अस अगजीत ग्रह, वस विखाद पळट्टियौ ।
रितु एण उदय चहुवान रैं, सुत अभमाल प्रगट्टियौ ॥६५॥

(दूहो)

महाराज अजमाल रै, नगर वधाई आज ।
नरपति मन भायौ थयौ, जायौ पुत्र सकाज ॥६६॥

(छंद अर्ध-नाराच)

सुरे घया नीसाणय, उछाह अप्रमाणय ।
विसाल ताल वाजित, उचार गान अमृत ॥६७॥

म्रदग ढोल मगळी, रबाब तार सार ली ।
वजति वेरि वेरिय, भणक्कि झकि भेरिय ॥६८॥

छतीस राग छाजती, निहाव धाव नोवतो ।
भजै विभास भैरव, रळी कळी कळी रव ॥६९॥

सरी सरी सपोसय, सुताल मालकोसय ।
मिठास आस भजरी, गरी गरी स गुज्जरी ॥१००॥

रजे मलार सारँग, रितप रग मारग ।
रसाल ताल सोरठी, सगान तान सामठी ॥१०१॥

भणत श्री विनोदय, कल्याण के कमोदयं।
खभायची पटगय, वगेसरी विहगय ॥१०२॥

कलग पर्ज कन्हड़ा, सुरा सवाद सुग्घडा।
निवास सात नाळिय, विश्राम मूळ ताळिय ॥१०३॥

(गाहा चौसर)

सबद उग्र करनाळ सबाई, सुर वरघु सुरही सहनाई।
द्वार सुरेस नरेस दिनाई वाधै सा़जैं दीह वधाई ॥१०४॥

कुळदेवी गृह पूज सकारण, विजन नव नेवज विसतारण।
धूप अगर दीपक सुभ धारण, अन देवा धन सेव अपारण ॥१०५॥

ओपै रूप घणी रायअगण, चौक मुकत कण केसर चनण।
तर मजर फळ माळा तोरण, सोहे द्वार मळ घ्रत सज्जण ॥१०६॥

(दूहो)

नव नव उच्छव नवल सुख, सब जण नवल सिंगार।
नवल चितामै धवळहर पायौ नवल कुमार ॥१०७॥

(छद बेअक्खरी)

अबा आदि तरण आभासे, परम कवर लखि हरख प्रकास।
सुदर चख मुख कर पद मोहै मजु रूप लख कज त्रिमोहै ॥१०८॥

अग-अग महिमा अधिकावै, सेज अनत तेज दरसावै।
नार सभारै जतन निहारै, ऊपर राई लूण उतारै ॥१०९॥

सूर सूर सम वदन निहावै, आपै मात रतन धन आवै।
सहर गळी प्रत गळो सुहावै, गुळ वाटे तिय मगळ गावै ॥११०॥

सपज अजन सदन सुखसाजा, राम जनम जिम दसरथ राजा।
गुणियण द्वार वधाई गावै, प्रतदिन अन सोव्रन धन पावै ॥१११॥

जगत सूत मागध बदी जण, आसावत किया नृप ऊरण।
जोगी जगत सन्यासी जेता, अन घृत अमिट लहै पुर एता ॥११२॥

चक्रवत चित वाधै कुळ चावा, असहा खीज, रीझ उमरावा।
जाळधर सुख कह्या न जावै, ईखण उदै अमर मिळ आवै ॥११३॥

('राजरूपक' सू)

# सेना रा वाहण

—करणीदान कवियो

## ऊट

बुगर बळोच बवाळ, जूग जाळोरी जब्बर।
अजगर कध असोस प्रगुट मुदगर भैराहर॥
जोल खभ देवळा, कमठ ईडर कठठता।
घण भरता जळ घाट, माट जैंही कठठता॥
मजबूत धूम डाचा मगर, जिया पूछ करवत जिसा।
झोकिया सिधु गुखता झटकि, मघ कध राक्स इसा॥३११॥

नवहत्थी झोकरा, मसत फीफरा भरारा।
बगला उरळी विहू, धगलि नीकळै छिकारा॥
रग केइक रातडा, भसम धूहर भमराळा,
जटा जूट ऊजळा केइक भूरा केई काळा॥
मिळि रीठ रूप अधियामणा, जक्स जिहाजा जम जिसा।
झोकिया सिधु गुखता झटकि, अघ-मघ राक्स इसा॥३१२॥

रब्बारा धप्पले, धग्घ पाकेट भयक्कर।
नैसा चसलक नयण, झाळ झागूडा नीझर॥
आका रीठ कुरीठ, वयड छोडे वेठाहा।
इसा दीठ अवनाड, पीठ ले हलै पहाडा॥
कत्तार भार भर कठठिया, करैं गाज झझट करे।
हालिया जाणि सामदहू, भाद्रव वादळ जळ भरे॥३१३॥

## हाथी

मदतळ डांणा मसत, झरैं झरणा गिर नीझर।
अन चारा तजि अरघ, पियैं तहकां नीरोवर॥

डग वेडिया दुलट्ठ, लगा चहुवा पग लगर।
आक्रासी सारसी, करै अग्राज भयकर॥
भभरूत रजी घोसर भसम, काळदूत चख झाळ किध।
वनि वसै भूत काळा ययड, वनखडी अवधूत विध॥३२१॥

छुब्छ मास छाविया, हुवा डाविया हठीला।
प्रचड नील जिम पीठ, निलै ढमलै जिम नीला॥
मघण गाज जिम सुणे, गाज मद भसत गयदा।
सादूळो सिर पटकि, मरै सगार मयदा॥
करि फोतकार झुकै कहर, चाढि सूड फण चाचरै।
सिखराळ गिरद चडि जाणि सप, काळदार झाटक करै॥३२२॥

घणा इसा घेरिया, भचकि करि गडा भयकर।
वैठ-वैठ बोलता, नीठ वैठा ओरावर॥
कळा जळा सपळाय, तेल आमसा चढावा।
कळा जडे काटिया, कळा बाधिया किलावा॥
कळ हूत तिलक सिर काढिया, प्रगट धनख जिम पावसा।
कज्जळ पहाड झळ मैंगळ किध, जाणै सिधा अमावसा॥३२३॥

रमा भीड रेसमा, झूल घट वीर झलारी।
परा गदीला परठि, धरा चाचरा अधारी॥
जोख नोख गुलजार, कलावूता वणि कम्मळ।
तरह काम तारीफ, हौमनायक झाळाहळ॥
जगमगत फूल जरदोज रा, ययडा पीठ वखाणिया।
अधार निसा जाणै वरस, तारामडळ ताणिया॥३२४॥

## घोडा

ऐराकी आरवी, धटी काछी खधारी।
कै बलकी सोवनी, वेव तुरकी अग्रकारी॥
मोती सुरग कमेत, लखी अबलख फुलवारी।
रग जडाव हमरग हरी सुनहरी हजारी॥
मौहरी चंपा सेली समंध, पचकल्याण पहचानिये।
अन्नेक रग पसमा बलल, जेहा मुखमल जाणिये॥३३३॥

डाच लगाणा डहे, इसा पडखा अपारा।
रौळ पसम खुरहरा मळै हाथळा अपारा॥

अग काढै आरसी, पोत भरळकै पसम्मा।
दरियाई क्स दीध, राळ लूबं रेसम्मा॥
झार्कति किलावूती सझे, तग रेसम जुग ताणिया।
ऊन्डा भीड उडणा इसा, उभे क्हा कसि आणिया॥३३४॥

क्रे पोस जर करी, वडी सोव्रन कोतल क्सि।
वागडोर रेसमी, तरह पचरग धरे तसि॥
एम खोल आणिया, परी करता ग्रत पाए।
सूरतपाक सुचग, जलज कुरंगा वधि जाए॥
के रजत साज जवहर कनक, छोगा मोत्तीयाळ छजि।
आणे अनेक हाजर इसा, कमध होण असवार कजि॥३३५॥

('सूरज प्रकास' सू)

# महाराजा अभयसिंघ री सेल

—वरजूबाई

(गीत)

आछौ अगजो ताहरौ भालौ सारी प्रथी सीस ओपै,
ऊगा सूर ज्यूं ही सारी प्रथी वदै आण।
सारी प्रथी तणी लाज भालै थारै अभैसिंघ,
प्रथी सारी भोग राळी हेकै भालै पाण॥१॥

गै-जूहा सिंधवा फोजा मरूठ तवाळा गाज,
बाज गैला खेहा ढकै पूर बोमवाह।
बेहू राही तणी नेकी राज रै छाडाळ वधी,
राज रा छाडाळ तणै ओलै दुहु राह॥२॥

रगाधार वरूथा डडाळा धूस पड़ै रोद,
अडीला छछाळा लोह लगरा अपार।
कूत रै भरोसै सारी खुरासाण जोखा करै,
कूत रै भरोसै जोखा करै हिन्दूकार॥३॥

हूरोळा सटाक पूर चदोळा कदवी हाथा,
सका न को फोजा धरै राजा राणा सेद।
उभै थाटा तणी नेकी आज तो अजीतवाळा,
गाजै थारै आण वागी दूसरा गमेद॥४॥

दसू दिसा राजा थारै सेल री दुहाई दीजै,
थारै सेल साहू जिसा ओझकै अथाह।
सेल थारै नचीती दिली री सारी पातसाही,
सेल थारै नचीतो दिली रो पातसाह॥५॥

(सकलित)

# गुण अलख

—पीरदान लाळस

निमो व्रिज रा बाळ सग लोक मासी।
आया नद रै आगणै, अविणासी॥
भला नद रै आगणै माहि नाचै।
भला राम रा सहज ए साचि राचै॥
भला बाप चरिताळ हाथे बधावै।
भला हेता सा जसोदा हुलरावै॥
भला घत मा जाइ मुरळी बजावै।
राजा राम ना ओथि राधा रमावै॥
भला पीरसे हुओ दईता पछाडै।
भनड गोरधन हाथि एकिणि उपाडै॥
भला मथुरा मा जाइ नै कस मारै।
भला आपरा भगत ओपी उधारै॥
भला उग्रसेना सरिसि राज आपै।
भला कुरिदि बाभण तणी तुरत कापै॥
भला रुखमणी राज रै पट्टराणी।
असुर मार नै आंहचै भली आणी॥
भला अनरज सू होज भरतार ओखा।
भला सहज पदवन रा तू होज सरीखा॥
भला जुध री यात अखियात जांणै।
माळी सारि नै बूबडो नारि माणै॥
भला जुध नै दंत गिणिया न जावै।
भला घर दहूळ नां सू होज थावै॥

('गुण अलख आराध' सूं)

# कुंडळिया

—केसरीसिंघ जेसावत

कह-कह करै कुरझडी, युग सू करै पुकार।
काची माया कारणै, सब भूलो संसार॥
सब भूलो संसार, देख माया आडम्बर।
जळ सूधी खिण जमी, नीम ऊडी देवै नर॥
ऊभा छाडि अवास, जाय जो रण को घर।
जीव हुवै जम हाथ, छार ऊपर लोटै ग्गर॥
विस्तार समर आळस म कर, रहै मौत सिर पर खडी।
केहर जगत सू इम कहै, करै पुकारा कुरझडी॥१॥

कहै गगन चढ कावळी, साभळ्यो सह कोय।
जो हर लाभै जीविया, तो मानव देखो मोय॥
मानव देखो मोय, बरस एक सहस वदीता।
ज्यू नर डसै भुयग, रहै मुख रीता का रीता॥
ऐसे ही पाळी देह, कछु नह लाभ कमायो।
जमी भमी असमान, जीवति आमिख पायो॥
अब अतर बार अळगो अनत, ऐसे होसी आमळी।
जगदीस भजो जीवो जितै, कहै गगन चढि कावळी॥२॥

बागुळ सिर ऊधी वडा, नीचो का निरखत।
भो माया घर मे रहो, को खिण काढ लियत॥
को खिण काढ लियत, जिण आटै धर जोऊ।
दिन काटू इण दुख, सदा रात री न सोऊ॥
न खाधो, न खरचियो, मेलि घर माहि लुकायो।
मुख खाणो, मुख विट, जनम ऐसो फळ पायो॥
पारको होय पडिया पछै, खाज्यो पिड ऊभे खडा।
केहरी कहै देखो सहू, वागुळ सिर ऊधी वडा॥३॥

हु हु हु  हु कर रह्यौ सुण घूघू विष जाण।
हु हु करता एक दिन, जासी छूट पराण॥
जासी छूट पराण, आव रौ म कर बडाई।
आठ सहस भख जीव, कहा सुभ कीध कमाई॥
निसा सताया जीव, मारि कै आमिख खायौ।
राजा नाम धराय, कहा गोविंद गुण गायौ॥
पाप री कीध सिर पोटली, आव बडी निसचर थयौ।
केहरी कहै घूघू कुटिल, हु हु हु [redacted] कर रह्यौ॥४॥

सारसडी सर छाडि कर, बोली चढि असमान।
कूडौ जीवण केहरी, मरणौ हक्क निदान॥
मरणौ हक्क निदान, नेट आ देह विडाणी।
वीसल हूदी वीस कोड, जळ माहि डुबाणी॥
दुरजोधन जळ पेस, मरण दिन माण गमाणौ।
जळनिध खाई जकौ, रह्यौ नह रावण राणौ॥
जळ माहि जीव जीवै नही, है दम जेतै गाय हरि।
केहरी गमण चढि यू कहै, सारसडी सर छाड करि॥५॥

आड तरै छीलर मही, सायर तर्यौ न जाय।
सायर में हंसा तरै, सो मोताहळ खाय॥
सो मोताहळ खाय, आड अधरम अहारा।
जैसे नर लोभ रा, करै आहार विपारा॥
परम हंस प्रम पुरख, कोई निरमळ होय ध्यावै।
सब त्यागै ससार, जकै मोताहळ खावै॥
केहरी कहै देखो सको, कथा एह सक्र कही।
कोई सूर हंस सायर तरै, आड तरै छीलर मही॥६॥

पप्पीयौ पिउ पिउ करै, पिउ की नही पिछाण।
केहरि पिव कै कारणै, प्यारी तजै पराण॥
प्यारी तजै पराण, मुक्ख कहतौ नह डोलै।
सहोदर सब ससार, गुहा अपणै पिउ खोलै॥
नगर नायका नार, फिरै होय सदा सोहागण।
घण माटिया निओत, अंत दिन जाय अभागण॥
मन साच बिना किम हरि मिलै, यू ही अलीक बच ऊचरै।
केहरि कहै मन म कपट, पापहीयो पिउ पिउ करै॥७॥

('गुण पखी प्रबोध' सू)

## वळै न वागड़ वास

—ओपा आढ़ो

(गीत)

जोबन कारमो विहाणे उठ जासी,
आदर भजन तणो अभियास।
प्राणीया कदे न आवै पाछो,
वळै न बीजा वागड वास ॥१॥

हुए सनाथ जगत मत हारो,
नाथ समर सुरलोक नरेस।
माण्यायका फेर नह मिळसी,
बीस कोड देता लघु वेस ॥२॥

सूते गाम म पाड सियाडा,
गाफल हिवडा रा रख ग्यान।
ओपा ए दन फिर कद आसी,
भजसो वळै कदे भगवान ॥३॥

फरसराम भज चाख अमृतफळ,
जनम सफळ होय जासी।
पाछो वळै अमोलक पछी,
अण तरवर कद आसी ॥४॥

(२)

थोडो ही कुण करै भरोसो थारो,
बीसे ही वातें लखण बुरा।
लूटे तो विण कुण लाखीणो,
जोबन सरखो रतन जुरा ॥१॥

अरजण भीम जसा आलीजा,
रेसे वेदल कीया रंग।
जरे तूज कवण जोजरी,
नवपण जसा अमोलख नग ॥२॥

पीळा चावळ कणें परठिया,
वे गम आवें माण वण।
हेर लिया जण जण रा हेतू,
पाण रा राखण तरणपण ॥३॥

चवबै खट थाका तन छेदे,
पाका जिम तरवर रा पात।
ओपा जुरा पयर नू आवै,
मानव देह तणी के मात ॥४॥

(३)

दिलडा समझ रे सगळो जग दाखे,
पछे घणो पछतासी।
पुरख जनम तू कद पामेला,
गुण कद हर रा गासी ॥१॥

मात पिता दोलत बंधव मद,
सुत तिरिया देख संधाणो।
माया रा आडम्बर माहे,
बदा केम बंधाणो ॥२॥

समझे क्यू न अजे समझावू,
भूल मती रे भाया।
दोड़ै ऊमर घटवा देती,
छिन ज्यू वादळ छाया ॥३॥

सोवै खाय करै नह सुकृत,
खोवै देह खलोता।
प्रीते करे समरो सीतापत,
जके जमारो जीता ॥४॥

(४)

पातरिया वाट, न-पीरा पीहर,
आलबण निरधारा आप।
तू तो मात न माया तीक्म,
बापो तु ही न बापा बाप ॥१॥

अलज्ज तु ही आळसिया उद्दम,
पाळग तु ही न-पखा पाख।
तू पग हाथ पागळा टूटा,
आधा तू परमेसर आख ॥२॥

परमेसर तू त्रसिया पाणी,
सत भूखिया साक रसाल।
गूगा वाच तु ही गिरधारी,
बडो तु ही है अकल विसाल ॥३॥

ब्रजवासी थाका वीसामो
जळ बूडा री तु ही जिहाज।
नी घरिया घर तू नारायण,
मादा री ओखद महाराज ॥४॥

साचो धणो विपत मे सपत,
सेडयो आवै सीजी ताळ।
विखमी घाट तणो वोळाऊ,
साई दुकाळा तणो सुगाळ ॥५॥

तोडण तु ही वेडिया ताळा,
पाळा री तू है सुखपाळ।
वौहनामी ऊघाडा बखतर,
ढळियो लोह न-ढाला ढाल ॥६॥

ओपो आढो क्है ईसवर,
नित राख चित थारो नाम।
तसनी माय देण सुख तू ही,
रान तणो वसनी तू राम ॥७॥

(सकलित)

# ठाकर जोधसिंध नाथावत चौमू रौ

—हुकमीचंद खिड़ियो

(गीत)

बागा ऊपड़ी सतारा सेन वाळो चोड़ै खेत बीच,
रुपताळी घड़ी हेक वागी वज्रयाह।
नाथाणी जोधार वस नीधोखे हरोळा नेत,
नेत वेहो बीघो बधे हरोळा निवाह ॥१॥

घणो हाक डाक हूवे हैअम्मा हुचक्कै घोड़,
कोळ दाढ चवके भू लचक्कै वोम वध।
जाडो भार महता आमर आडो यद्र जेम,
बीजो नाथ जूटो फोजा लाडो नेगवध ॥२॥

कोमडा भणके चीला मणके माढवां मौक,
सनाहा खणके कड़ी वेई जोम सग।
क्रोध झाळा मत्थे डाक डकाळा रणंके ढ़ई,
वीर माळा मत्थे वेई भणंके बाग्ग ॥३॥

तेज जगा तोर्वे बोम वारणा विणंके गू ही,
घारणा मघोस तू ही अग अम्ह घोट।
जगा नाग वाळा धू पहाड वाळा गूंजियो वै,
रोखणी कराळा तू [illegible] गई आरा रोट ॥४॥

गिरदा कत्रोड़ दहा गेह नगारां गू गाजै,
भाजै भीच भारा गू के वागियां भाराय।
साहमी सहस सार धारा मू मिनान गाजै,
नाप मनारा मूं वाजै नायवना नाथ ॥५॥

काढी थोम थोरा नेत मोहनेम काढा कुड़,
गाढा धगा धोहनेम काढा तोषा गड़।
विमाण अरोहनेम काढा बोम मोरा बोने,
मोहनेम काढा काढा झोवर राडो गड़॥६॥

नद धूमनाय नू नचाड़ो धाड़ी वीर भट्टा,
रूप हून राहि भाग घटा कोध रोध।
कोध धार हटा जूझ घटो घटा झड़े केई,
कोध मारहटो पाड़ी पड़े महाकोध॥७॥

झाड़ बाढ़ भड़ो पड़ो झड़करी ओझाड़ा बाहे,
दाहे कराबान भड़ो छड़ो बांध धोर।
धूर छोर बांन कै कबानगीर बाण गाहे,
गाहे गोरबान हणी गौरबान मोर॥८॥

(संकलित)

# नीति-वचन

—किरपाराम खिड़ियो

सुख मे प्रीत सवाय, दुख मे मुख टाळो दियो ।
जो की कहसी जाय, राम-कचेड़ी, राजिया ।।१।।

सो मूरख ससार, कपट जिणा आगळ करै ।
हरि सह जाणणहार, रोम-रोम री, राजिया ।।२।।

ओछ अकल उपाय, कर आछो, भूडो न कर ।
जग सह चाल्यो जाय, रेळा की ज्यू, राजिया ।।३।।

समर सियाळ सुभाव, गळियारा गाहड करै ।
इसड़ा तो उमराव, रोट्या मूहगा, राजिया ।।४।।

लाखा तीतर लार, हर कोई हाका करै ।
सीहा तणी सिकार, रमणी मुसकल, राजिया ।।५।।

आवै नही, इलोळ, बोलण चालण री विविध ।
टीटोड्या रा टोळ, राजहस री, राजिया ।।६।।

नभचर विहग निरास, बिन हिम्मत लाखा वहै ।
बाज झपट कर बास, रजपूती सू, राजिया ।।७।।

लूका करै न लोप, बन नाहर भेळा बसै ।
करै न सबळा कोप, रका ऊपर, राजिया ।।८।।

रोटी, चरखो, राम, इतरो मुतलब आपणो ।
वे डोकरिया काम, राजकथा सू, राजिया ।।९।।

पल-पल मे कर प्यार, पल-पल मे पलटै परा ।
ये मतलब रा यार, रज मुख लायक, राजिया ।।१०।।

मतलब री मनवार, चुपकै ल्यावै चूरमो ।
बिन मतलब री बार, राब न घालै, राजिया ।।११।।

घोचो लाग्या घाव, घी गीहूं भावै घणा।
इसडा तो उमराव, रोट्या मुहगा, राजिया ॥१२॥

आहव नै माचार, वेळ्या मन आघो वधै।
समझ कीरती सार, रग छै ज्यानै, राजिया ॥१३॥

धारण कटक न कीध, सखरा चाहीजै सुपह।
लक विकट गढ लीध, रींछ-बानरा, राजिया ॥१४॥

मलयागिरी मझार, हर कोइ तर चदण हुवै।
सगत लियै सुधार, रूखा नै ही, राजिया ॥१५॥

मिलिया अत मनवार, बीछड़िया भाखै बुरी।
लानत दे ज्या लार, रजी उडावो, राजिया ॥१६॥

मिणधर विम्र अणमाप, मोटा नह धारै मगज।
बीछू पूछ बणाव, राखै सिर पर, राजिया ॥१७॥

साचो मित्र सचेत, कह्यो न काम करै किसो।
हर अरजन रै हेत, रथ कर हाक्यो, राजिया ॥१८॥

गहमरियो गजराज, मद छकियो चालै मतै।
कूकरिया बेकाज, रगड भुसै क्यू, राजिया ॥१९॥

गुण-औगुण जिण गाव, सुणै न कोई साभळै।
मच्छ-गळागळ माय, रहणो मुसकल, राजिया ॥२०॥

मतहीणा सिरदार, मतहीणा राखै मिनख।
अस आधो असवार, राम रुखाळो, राजिया ॥२१॥

हियै मूढ जो होय, की सगत ज्या रो करै।
काळै ऊपर कोय, रग न लागै, राजिया ॥२२॥

उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखित करै।
कडवो लागै काग, रसना रा गुण, राजिया ॥२३।

पाटा पीड उपाव, तन लाग्या तरवारिया।
भरै जीभ रा घाव, रती न ओखध, राजिया ॥२४॥

नहचै होय निसक, चित नह कीजै चळ-विचळ।
अै विधना रा अक, राई घटै न, राजिया ॥२५॥

(सकलित)

## भरत

—मछ (मनसाराम)

(गीत)

आयो भरथ अवध अभंग,
 मढे पावडी उतमंग।
रइयत चौध अत उछरंग,
 इम आवास जाय उमंग ॥१॥

जालम तखत कथण जाण,
 पधरा पावडी निज पाण।
राजा राम री रसणाण,
 आलम अदल वरती आण ॥२॥

थेटू छोड सबा थोक,
 मह अघ दीध हासल मोक।
सालू ईत रो नहँ सोक,
 नगर सुखी सगळा लोक ॥३॥

वलकल पहरिया धर बोध,
 राघी इंद्रिया कर रोध।
सोवै धरा आसण सोध,
 जीमै वखत एकण जोघ ॥४॥

गुन ग्रह भेरई सरसाय,
 बन विध रिषी अग बणाय।
मोघा चारणे धन चाय,
 मन हर रहै चरणां मांय ॥५॥

('रघुनाथ रूपक गीतां रो' सूं)

# गीत

—बांकीदास आशियो

## १ श्री करणीजी

कीधौ तै कोप साझियो कानो,
      रिडमल नै दीधौ तै राज।
चारणवाडा तणी चारणी,
      लोक महो तू राखै लाज ॥१॥

घरपाडा घरपाका वाळी,
      आभ जडा नाखै ऊपाड।
कोय न गाज सके किणियाणी,
      जीझणियाळ तुहाळा झाड ॥२॥

मेछा अपराधिया मारणी,
      भला सवगा आवै भाव।
करै करा छाया तू करणी
      गाजे कुण गढवाडा गाव ॥३॥

बाका, मेहासधू म विसरै,
      सकट हरै साभळै साद।
गढवाडा गढ ओलै गाजै,
      मढ रै ओलै गढा मजाद ॥४॥

## २ पाबूजी राठौड

प्रथम नेह भीनो, महाक्रोध भीनो पछै,
लाभ चमरी समर, झोक लागै।
रायकवरी वरी, जेण वागै रसिक,
वरी घड कवारी, तेण वागै ॥१॥

हुवे मगळ धमळ, दमगळ वीर हक,
रग तूठो वमध, जग रूठो।
सघण बूठो कुसुम वोह जिण मौड सिर,
विसम उण मौड सिर, लोह बूठो ॥२॥

करण अखियात चढियो भला काळमी,
निवाहण वैण भुज बाधियो नेत।
पवारा सदन वरमाळ सू पूजियो,
खळा किरमाळ स पूजियो खेत ॥३॥

सूर वाहर चढे चारणा सुरहरी,
इतै जस जितै गिरनार आबू।
विहड खळ खीचिया तणा दळ विभाडे,
पोढियो सेज रणभोम पाबू ॥४॥

## ३ उद्बोधन

आयो इगरेज मुलक रै ऊपर,
आहस लीधा खैचि उरा।
धणिया मरे न दीधी धरती,
धणिया ऊभा गई धरा ॥१॥

फौजा देख न कीधी फौजा,
दोयण किया न खळा डळा।
खवा-खाच चूडै खावद रै,
उण हिज चूडै गई यळा ॥२॥

छत्रपतिया लागी नँह छाणत,
गढपतिया घर परी गुमी।
बळ नँह कियो बापडा बोता,
जोता-जोता गई जमी ॥३॥

दुय चत्र मास वादियो दिखणी,
भोम गई सो लिखत भवेस।
पूगो नही चाकरी पकडी,
दीधो नहीं मरैठो देस ॥४॥

वजियौ भलो भरतपुर वाळो,
गाजे गजर धजर नभ गोम।
पहिला सिर साहब रो पडियो,
भड ऊभा नँह दीधो भोम ॥५॥

महि जाता चीचाता महिला,
ऐ दुय मरण तणा अवसाण।
राखो रे किहिक रजपूती,
मरद हिन्दू की मुसलमाण ॥६॥

पुर जोधाण उदैपुर जैपुर,
पहु थारा खूटा परियाण।
आंकै गई, आवसी आंकै,
बांकै आसल किया बखाण ॥७॥

(सकलित)

# डिंगल री महिमा

—नवलदान लाळस

(गीत)

किसू व्याकरण अवर भाखा अनै पराक्रत,
ससक्रित तणै क्यू फिरै सागै।
लाख रा ठाकरा तणा माया लुळै,
आखरा तणा गजबोह आगै ॥१॥

नायका पाठडा हूत आवै नही,
लायका छरा री अतर लाहा।
कोइक बिरदायका माय जाणै सकव,
वायका सायका तणी वाहा ॥२॥

तिकण री सीखिया भेद नावै तुरत,
सुरत पण पेखिया पढै सासै।
विघव घण जाण रा माण छाडै वहै,
वाण रा जहूरा तणै वासै ॥३॥

जोगमाया तणी भगति कीधा जुडै,
प्रथी सिर मुडै नह विकट पैडा।
भगत रा पुत्र जाणै कोइक वचन सिध,
उगत री जुगत रा घाट ऐंडा ॥४॥

(सकलित)

# श्रीराम स्तुति

—किसनो आढो

(गीत चित्त-हिलोळ)

दीनां पाळगर धन सुतन दसरथ, सकज सूर समाथ।
रिणखेत भजण सकुळ रावण, नेतबध रघुनाथ।
तो रघुनाथ रे रघुनाथ,
रिवकुळ आभरण रघुनाथ ॥१॥

तन स्याम सघण सरूप ओपत, सुपट बीज सवाय।
रिम कोट हण जन ओट रखण, मोट मन महराज।
तो महराज रे महराज,
माहव मोट मन महराज ॥२॥

हक-बगा लाखा असुर हरणो, जुधा करणो जैत।
घाळणो कुळ जळ दळद धोजा, बाळणो बिरदैत।
तो बिरदैत रे बिरदैत,
बिरदा धारणो बिरदैत ॥३॥

बळ तणा अवखी बखत बेली, तवै जगत तमाम।
नित किसन किव रट नाम निरभै, रसन सी रघुराम।
तो रघुराम रे रघुराम,
रजवट धारिया रघुराम ॥४॥

('रघुवर जस प्रकास' सू)

# नीति

—रायसिंघ सांदू

जोय घर लका जेण, सोना री हुती सरब।
दसकंध रै मुख देण, मिळियो रती न, मोतिया ॥१॥

वीसलदे वाळीह, मत कोइ कीजो मानवी।
भेळी कर माळीह, माण न जाणी, मोतिया ॥२॥

लाखा आवै लोय, सपना ज्यूं जावै सरब।
हुवै भगत ज्यां होय, मुगत परापत, मोतिया ॥३॥

अजे धणी उज्जेण, भणजे दाता भोज री।
जुग मे दाता जेण, मरै न कीरत, मोतिया ॥४॥

दाटी बीकाणेह, रासै माया राठवड।
जुग सारो जाणेह, माया न दाटी, मोतिया ॥५॥

मूमा रै घर सोय, हेम तणा भाखर हुवै।
काज न आवै कोय, मिनखा बीजा, मोतिया ॥६॥

पिंड मे मोटा पाप, पग वहता बाधा पडै।
अळगा रहिये आप, मैला मिनखा, मोतिया ॥७॥

रात दिवस हिव राम, पढिये जो आठू पहर।
तारे कुटम तमाम, मिटै चौरासी, मोतिया ॥८॥

राखै द्वेस न राग, भाखै नह जीभा बुरो।
दरसण करता दाग, मिटै जनम रा, मोतिया ॥९॥

जीह न बोलै झूठ, श्रवणा झूठ न सांभळै।
करजै कुण वैकूठ, माधव दरगह, मोतिया ॥१०॥

(सकलित)

# गोपी-विरह

—बखतावर

(पद)

बिहारीजी म्हासूं नेहड़लो न बिसार ।।टेक।।
बांह पकड़ि मति छाडो साजन, बिन आयू मत मार।
थारै कारण राज बिहारी, म्हे तन मन धन दियो वार।
बखत पड़्या आज्यो बखतावर, बिरह अगन मत जार ।।

( २ )

थारा छा बिहारी, म्हासूं नेह न तोड़ो ।।टेक।।
थारी म्हारी प्रीत पुराणी, अब थे मुख मत मोड़ो।
एक बात की कांण राखज्यो, बांह पकड़ि मत छोड़ो।
टूटी मन मिलै नहीं बखतावर, तातैं फेरि बहोड़ो ।।

( ३ )

भली पाळी प्रीत बिहारीजी, इचरज आवै ।।टेक।।
प्रीत करी कछु वैर बिसायो, अब म्हारो मन पिछतावै।
छिन-छिन जोड़ी, पल-पल तोड़ी, कुण थानै भला बतावै।
कपट प्रीत सूं वैर भलो छै, बखतावर मन भावै ।।

( ४ )

थारा छा बिहारी म्हासूं स्यां मति जावो ।।टेक।।
तात मात अर कुटम कबीलो, तुम बिन ठौर बतावो।
थासूं जोड़ सकल स तोड़ी, मन थारै चरणा रखावो।
कहै बखतावर सुणो व्रजनदजी, बिरह की अगन बुझावो ।।

( ५ )

बिहारी थारो नेहड़लो, सोई दीठो ।।टेक।।
हिया रो हेत हाथ मे ई दीसै, मन क्यूं राज रो चीठो।
व्रजबास्यां नै जोग सदेसो, काई सो लगायो छै अंगीठो।
बखतावरि पिया खाया ही जाणज्यो, गुड़ तो अधेरै मे ही मीठो ।।

(६)

म्यानणी मे ऊभा जी बिहारी म्हारा राज,
प्यारा म्हानै लागो ॥टेक ॥
थे तो बिहारी म्हानै ऐसा प्यारा लागो,
ज्यू बामण गळ तागो ।
थे तो बिहारी म्हानै ऐसा प्यारा लागो,
ज्यू सोनै माय सुहागो ।
मोर मुकट पीताम्बर सोहै,
अर केसरिया बागो ।
पहली प्रीत करी मन मोहन,
अब म्हानै मत त्यागो ।
कहै बखतावरि मीरा बडभागण,
भाग पुरबलो जागो ॥

( ७ )

थोडो रग दीज्यो जी बिहारी म्हारा राज,
दूणी म्हानै आवै ॥टेक॥
भाग मिरच का खेत बुहाया, राधा राणी सुरड मगावै ।
सोनै की कूडी, रूपै को घोटा, मथरा की मिरच मगावै ।
और सख्या नै थोडी प्यावै, राधा राणी अधिक छिकावै ।
कहै बखतावर सुणो ब्रजचदजी, पीता ही रग चढावै ॥

(सकलित)

# द्रौपदी री पुकार

—रामनाथ कवियो

द्रोपद हेला देय, वेगो आ, वसुदेवरा।
लाज राख जस लेय, लाज गयां व्रद लाजसी ॥१॥

सारो पळट्यो साथ, कूड़ विचारी कैरवा।
हरि इज्जत नैं हाथ, सह मिल घालैं, सावरा ॥२॥

पति मो वचन प्रमाण, प्राण प्रबळ तज बैठिया।
औ कौरव अवसाण, सबळो पायो, सावरा ॥३॥

खरो ज पाको खेत, ऊभा धणिया ऊजड़ै।
चित मे कीजै चेत, वेगो आ, वसुदेवरा ॥४॥

पति मो देखै पाथ, धरता पग धूजै धरा।
आवै लाज न आथ, धर नख सूं कुचरे धवल ॥५॥

सासू अरिया साल, जाया पाचूं जो मरद।
खोटो रचियो ख्याल, सब जग हंसै ज, सावरा ॥६॥

होय सभा हमगीर, दुस्सासन खैंचे दुसट।
चिळ्यो पुराणो चीर, सिर सूं चाल्यो सावरा ॥७॥

मो मन पड़ियो मोच, 'आव कया' आयो नहीं।
साड़ी रो नहं सोच, सोच विड़द रो, सावरा ॥८॥

ओ तन तिल जेतोह, आज सभा विच ऊघड़ै।
हरि पाडव हेतोह, हूं जाणूं होतो नहीं ॥९॥

मिनिया मजारीह, अगन प्रजाळी ऊबर्‌या।
बरती मो बारीह, सोवैं क जागै, सावरा ॥१०॥

रज्जसुला नारीह, कया गोप किण स कहूं।
समझो हर सारीह, सरम धरम री, सावरा ॥११॥

सेतां तिरिया लाज, पति वोदो आडो पड़ै ।
ऐ नर बैठा आज, सिंघ स्याळ ह्वै, सांवरा ॥१२॥

लाखाग्रह री लाय, तैं पांडव राख्या उ दिन ।
वड़ा किया वन माय, साथ न छोड्यो, सांवरा ॥१३॥

देखै भीसम द्रोण, जेठ करण देखै जठै ।
को हरि वरजै कोण, लाज-रखाळा लाज ले ॥१४॥

होसी जग मे हास, द्रोपद नागी देखतां ।
साड़ो पहली सास, सटकै लें ले, सांवरा ॥१५॥

जाणै किसो अजाण, तीन लोक तारण-तरण ।
होवै द्रोपद हाण, सरम धरम री, सांवरा ॥१६॥

गुड्ढ वचन गायोह, सुण पायो जद सांवरो ।
अत वेग आयोह, चीर वधायो चौगणो ॥१७॥

धरती पड़यो ढिगास, अंवर सू अवर अडयो ।
आयो पूरण आस, सम्पत घर ले सांवरो ॥१८॥

('करुणा बावनी' सूं)

# वीरलोक

—सूर्यमल्ल मीसण

इळा न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई माय॥१॥

पायौ हेली पूत नूं, सोमल थण लिपटाय।
अचरज अतरै जीवियो, क्यूं न मरै अब जाय॥२॥

बिण नूतै घण पाहुणा, हेली ठलिया आय।
जाणै पीव परूसणो, भूखा हेक न जाय॥३॥

घण नूं आळगसी धणी, सुणिया वागी सार।
हालीजै उण देसडै, प्राणा री व्यापार॥४॥

निधडक सूनो केहरी, तो भी विमुहा पाव।
गज गैडा धीर न धरै, बजा पडै बयवाव॥५॥

पग पाछा, छाती धडक, काळी-पीळी दीह।
नैण मिर्चं साम्हो सुणै, कवण हकाळै सीह॥६॥

तुडा गज, फेटा तुरी, डाढा भड औझाड।
हेकण कोलै घूदिया, फोजा पाथर पाड॥७॥

सखी अदर पौढियो, काळो दबके काय।
पूगी ऊपर पाधरी, आवै भोग उठाय॥८॥

विण माथै वाढै दळा, पोढै करज उतार।
तिण सूरा रो नाम ले, भड बाधै तरवार॥९॥

टोटै सरका भीतडा, घाते ऊपर घास।
वारीजै भड झूपडा, अधपतिया आवास॥१०॥

('वीर सतसई' सूं)

## गीत

दगो विचारै फेरियौ अगरेजा लोगा चौगिडद्दो,
तासा बबी झडदा, तेडियो नाग ताय।
भाल घाचो फेरियो, खेह री हूत छायो माण,
बाघलौ वेहरो 'चैन' घेरियो बलाम ॥१॥

माचै खाग झाटा राचै तवाई छ खडा मायँ,
रत्ना आट पाटा नदी बहाई रोसाग।
पाथ थाटा जग रूपी कुवाणा नवाई पाणा,
सन्नाटा वेढियो थाटा, सवाई सौभाग ॥२॥

सुणै घोर तासा, आसमाण लागियो सीस,
सत्ता घू 'चैन' रो खाग वागियो समूळ।
कोपै हूण' आसुरा विभाडवा आगियो किनर,
सिंधुर पाडेवा सूतो जागियो सादूळ ॥३॥

देखता एहवो जग धडक्कै आगरो दिल्ली,
बबी जैत मागरा रडक्कै वारवार।
झडक्कै खाग रा बाढ, भडक्कै कायरा झुड,
हमल्ला नाग रा माथा रडक्कै हजार ॥४॥

(सकलित)

# ऊनाळो

—ऊमरदान

तपै भूम अम्मर हुय ताता, मुरझाई मगती पितु-माता ।
धागी झाट पिछम दिस धाता, बक हुवो सब देस विधाता ॥
सर धर सूका नदी तडागा, लाज धर्म विद्या मग लागा ।
आरज हंसा उडगा आगा, कपटी दादर रह्गा कागा ॥
सीळ संतोष शूरता सारा, तूटण लगा दिवस में तारा ।
खूटा नीर निवाणा खारा, चोपाया घर मिळै न चारा ॥
भूमि माझ धसगो जस भोगी, साध सुहस्ती ससके सोगी ।
दान ऊट रे लागी दोगी, जाण अजाण सोइ थाक्यो जोगी ॥
जाचक हिरण तिसाया जावै, पुन्न नीर सुपनं नहिं पावै ।
धर जिग्यासू दस दिस धावै, मृगतिसणा गुरु लख मुरझावै ॥
सत-संगत सुर बाग सुकायो, मिळे कहूं बळियो मुरझायो ।
ठडो जळ नहिं ठरे ठरायो, भूले ज्ञान सुण्यो मन भायो ॥
आई उमड अविद्या आंधी, च्यार वर्ण चडगी चखचाधी ।
धिरचा धजा तूटगी वाधी, सदाचार री संधे न साधी ॥
कविजन वृन्द कवळ कुमळाया, गीत कुकवि जणु स्याळा गाया ।
मूरख भगता सोर मचाया, काळी रात जरख कुरळाया ॥
ओ ऊमर ऊनाळो आयो, दीन जना दोरो दरसायो ।
पाणी ज्ञान कोई नहिं पायो, कूकै लोक हुवो अति कायो ॥

('ऊमर काव्य' सूं)

# रे मन

—चतुरसिंह (महाराज)

(पद)

रे मन, छन ही मे उठ जाणो,
ईं रो नी है ठोड-ठिकाणो ॥ टेक ॥

साथै कई नीं लायो पैली, नी साथै अब जाणो।
थी थी आस मलेगा आगे, जो जो करम कमाणो ॥
भो भो जतन करे ईं तन रा, आखर नीं आपाणो।
करणो वै सो झट कर मे, पछै पडै पछताणो ॥
दो दन रा जीवा रे खातर, क्यो अतरो ऐंठाणो।
हाथा मे तो कई नी आयो, बाता मे बेकाणो ॥
कणी सीम पै गाम बसावै, कणी सीम कमठाणो।
ई तो पवन पुरख रा मेटा, चातुर भेद पिछाणो ॥

(दूहा)

रहट फरै, चरखी फरै, पण फरबा मे फेर।
हेर बाड हर्‍यो करै, हिर पूनां रा ढेर ॥१॥

बाल्हा विधै विरोध ओ, करै फूकर्‍यां खाद।
वां नू लो पाटा भणा, मा पै मेटै दाद ॥२॥

कादै ओ भगवान, दूजा दुख दीजै सभी।
पोंठा नू विगवान, मत दीजै मालेगरी ॥३॥

(संकलित)

## चेतावणी रा चूंगट्या

—केसरीसिंह बारहठ

पग-पग भम्या पहाड़, धरा छाड राख्यो धरम।
(ईंमू) महाराणा र मेवाड़, हिरदै बसिया हिंद रै ॥१॥

घण घलिया घमसाण, (तोई) राण सदा रहिया निडर।
(अब) पेखता फुरमाण, हलचल किम फतमल हुवै ॥२॥

गिरद गजां घमसाण, नहचे धर माई नहीं।
(ऊ) मावै किम महाराण, गज दो सै रा गिरद मे ॥३॥

ओरां ने आसाण, हाका हरवळ हालणो।
(पण) किम हाले कुळराण, (जिण) हरवळ साहा हाकिया ॥४॥

नरियंद सह नजराण, झुक करसी सरसी जका।
(पण) पसरेलो किम पाण, प्राण छतां थारो फता ॥५॥

सिर झुकिया सह साह, सीहासण जिण साम्हनै।
(अब) रळणो पगत राह, फावै किम तोने फता ॥६॥

सकल चढावै सीस, दान धरम जिण रो दियो।
सो खिताब बखसीस, लेवण किम ललचावसी ॥७॥

देखेला हिंदवाण, निज सूरज दिस नेह सू।
पण तारा परमाण, निरख निसासा न्हाकसी ॥८॥

देखे अंजस दीह, मुळकेलो मन ही मना।
दभी गढ दिल्लीह, सीस नमतां सीसवद ॥९॥

अंत बेर आखीह, पातल जो बाता पहल।
(वे) राणा सह राखीह, जिण री साखी सिर जटा ॥१०॥

कठिन जमानो कौल, बाधे नर हीमत बिना।
(यो) वीरां हदो बोल, पातल सांगे पेखियो ॥११॥

अब सब सारा आस, राण रीत कुळ राखसी।
रहो माहि मुखरास, एकलिंग प्रभु आप रै ॥१२॥

मान मोद सीसोद, राजनीत बळ राखणी।
(ई) गवर्नमेट री गोद, फळ मीठा-दीठा फता ॥१३॥

(सकलित)

# कपूत-सपूत

—हिंगळाजदान कवियो

## कपूत (गीत)

वहियो फरजद न मानै काई, छक तरुणाई मछर छिलै ।
महली नू तो मिलै कमाई, माईता नू भूड मिलै ॥१॥

पढ-पढ ठीक सीख पडवा मा, कडवा वचना दगध करै ।
जीमै घी गोहू जोडायत, मा तोडायत भूख मरै ॥२॥

बरतै सोड-सोडिया बेटो, पैमद हेटो बाप पडै ।
मूडां हूत न बोलै मीठो, लालो बूढा हूत लडै ॥३॥

सरवण न हुवै हियो सिळावण, हियो जळावण कस हुवै ।
पोषै काम कुटीजै थाळी, कळजुग राळी भाग कुवै ॥४॥

## सपूत (गीत)

सरवण री रीत प्रीत सरसावै, चावै कुसळ ऊजळै चीत ।
जाया भला धिनो-धिन जानै, मानै कर तीरथ माईत ॥१॥

हीडा करै हुकम मे हालै, लाभ सपूती तणो लहै ।
माईता राखै सिर माथै, रज पावा री आप रहै ॥२॥

दाखै फजर भला मुख दीठा, मीठा वचना न को मणा ।
पोखै सद भोजन पूगरणा, तन मन माता-पिता तणा ॥३॥

साचै मन राखै घर साहृ, बैठै सहज घणी बरदास ।
बेटो इसो मिलै जो विरळो, तिरळोकी मा किया तलास ॥४॥

(सकलित)

## डा० मनोहर शर्मा

**जलम** . आसोज बदी २, स० १९७२ वि०। बिसाऊ (झुंझुणू) राजस्थान।

**भणाई** एम० ए०, पी-एच० डी, साहित्यरत्न, काव्यतीर्थ।

**साहित्य-साधना** लारलै पचास बरसा सू अध्यापन साथै साहित्य-सेवा सारू समर्पित। चाळीस पोथियां अर करीब तीन सौ शोध-लेख प्रकाशित। 'वरदा' तथा 'विश्वभरा' शोध-पत्रिकावां री सम्पादन।

**पद तथा सम्मान** अध्यक्ष—हिन्दी विश्वभारती (बीकानेर), सगीत भारती (बीकानेर), उपाध्यक्ष—राजस्थान साहित्य समिति (बिसाऊ)। कलकत्ता, बंबई, दिल्ली तथा बीकानेर री सस्थावां द्वारा पुरस्कृत। तरुण साहित्य परिषद्, बिसाऊ री तरफ सू अभिनदन-ग्रंथ समर्पित।

**वर्तमान ठिकाणो** . १९, कैलाश निकुंज, राणी बजार, बीकानेर (राजस्थान।